हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

18 सितम्बर, 2006

खण्ड 3, अंक 1

अधिकृत विवरण

विषय सूची

सोमवार, 18 सितम्बर, 2006

	पृष्ठ संख्या
शोक प्रस्ताव	(1) 1
अति विशिष्ट व्यक्ति का सम्मान	(1) 27
बैठक का स्थगन	(1) 27

मूल्य : 40

हरियाणा विधान सभा

सोमवार, 18 सितम्बर, 2006

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन, सैक्टर-1, चण्डीगढ़ में 14.00 बजे हुई। अध्यक्ष (डा० रघुवीर सिंह कादियान) ने अध्यक्षता की।

शोक प्रस्ताव

Mr. Speaker : Hon'ble Members, I welcome all of you, Now Hon'ble Chief Minister will make obituary references.

मुख्यमंत्री (श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा) : अध्यक्ष महोदय, हमारे कई साथी जो पिछले सदन में हमारे साथ थे पिछले सत्र तथा इस सत्र के दौरान बहुत सारे हमारे साथी इस संसार के बीच से हमें छोड़ कर चले गए हैं उनमें प्रमुख हैं चौधरी बंसी लाल, सूरज भान, स्वामी इन्द्रवेश आदि। ये सभी लोग इस विधान सभा और पार्लियामैंट के सदस्य रहे। इनके अतिरिक्त हमारे कई महान् स्वतंत्रता सेनानी और कई शहीदों ने अपने देश की रक्षा के लिए अपने प्राण दिये इनके लिए मैं इस महान् सदन में शोक प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूँ। सबसे पहले मैं चौधरी बंसी लाल जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं।

श्री बंसी लाल, हरियाणा के भूतपूर्व मुख्य मंत्री

यह सदन हरियाणा के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री बंसी लाल के 28 मार्च, 2006 को हुए दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

आधुनिक हरियाणा के निर्माता श्री बंसी लाल का जन्म 26 अगस्त, 1927 को हुआ। ग्रामीण परिवेश में पले-बढ़े होने के वजह से उन्होंने ग्रामीणों की समस्याओं को नजदीक से देखा और अनुभव किया था। इनके कल्याण-उत्थान की तड़प उन्हें राजनीति में ले आयी।

श्री बंसी लाल ने अपना लम्बा व यशस्वी विधायी जीवन वर्ष 1967 में शुरू किया, जब वे पहली बार हरियाणा विधान सभा के लिए चुने गये। वे 1968, 1972, 1986, 1991, 1996 तथा 2000 में भी हरियाणा विधान सभा के लिए चुने गये। उन्होंने 1968 से 1972, 1972 से 1975, 1986 से 1987 तथा 1996 से 1999 के दौरान हरियाणा के मुख्य मंत्री पद को सुशोभित किया।

मुख्य मंत्री का दायित्व सम्भालते ही वे इस पिछड़े प्रदेश का कायाकल्प करने के संकल्प के साथ इसके नव-निर्माण में जुट गये। तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के आशीर्वाद एवं अपनी प्रशासकीय दक्षता के बल पर उन्होंने हरियाणा को प्रगति का प्रतीक बना दिया। उनके 11 वर्ष से अधिक के मुख्यमंत्रित्व काल में प्रदेश के चहुंमुखी विकास की बदौलत ही उन्हें आधुनिक हरियाणा के निर्माता की संज्ञा दी जाती है। उनके मुख्य मंत्री काल में ही हरियाणा सभी गांवों को पक्की सड़कों से जोड़ने तथा बिजली पहुंचाने वाला देश का पहला राज्य बना। रेतीले एवं ऊंचे-नीचे

इलाकों में सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए उठान सिंचाई जैसी अनुठी परियोजनाएं शुरू की गई। राज्य में श्वेत एवं हरित् क्रांति का सूत्रपात हुआ तथा शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यटन के क्षेत्रों मे उल्लेखनीय प्रगति हुई।

वे 1960 एवं 1976 में राज्य सभा के लिए दो बार तथा 1980, 1985 एवं 1989 में लोक सभा के लिए तीन बार चुने गये। उन्हें रक्षा, रेलवे एवं परिवहन सरीखे महत्वपूर्ण विभाग सम्भालने का गौरव भी प्राप्त हुआ। उन्होंने जिस भी सार्वजनिक पद पर सेवा की, वहां उन्होंने अपने दूरदर्शिता, कुशल नेतृत्व और प्रशासकीय दक्षता की अमिट छाप छोड़ी। उनका सात बार हरियाणा विधान सभा, तीन बार लोक सभा तथा दो बार राज्य सभा के लिए निर्वाचित होना जन-मानस में इस 'विकास पुरुष' की लोकप्रियता साबित करता है।

श्री बंसी लाल एक सच्चे कर्मयोगी थे। स्वाभिमान, सादगी, कठोर अनुशासन और स्पष्टवादिता के धनी श्री बंसी लाल अपने पांच दशक के राजनीतिक जीवन में बुलंदियों तक पहुंच कर भी न कभी अपनी मिट्टी से दूर हुए और न कभी पद की लालसा उन्हें छू पायी। वे साफ छवि और उच्च नैतिक मूल्यों के धनी थे। अध्यक्ष महोदय, व्यक्तिगत तौर पर हमारी दो पीढ़ियों ने उनके साथ काम किया है। मेरे पिता जी पार्लियामैंट में उनके साथी रहे हैं। और जब मैं यहां विधान सभा में अपोजिशन मे था तो वे इस सदन के नेता थे। चौधरी बंसी लाल जी के पुत्र स्वर्गीय सुरेन्द्र सिंह जी भी इस सदन में हमारे साथ और आज उनके पुत्र श्री रणबीर सिंह महेन्द्रा, उनकी पुत्र वधु किरण चौधरी और उनके दामाद श्री सोमवीर सिंह जी इस सदन के सदस्य हैं। श्री बंसी लाल की प्रगतिशील विचारधारा, उनका महान चिंतन और उनकी दूरदर्शी नीतियां हमारा सदा मार्गदर्शन करती रहेंगी।

उनके निधन से देश, विशेषकर हरियाणा अपने 'विकास पुरुष', एक अनुभवी सांसद एंव एक उच्चकोटि के प्रशासक की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

श्री सूरज भान, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

अध्यक्ष महोदय, श्री सूरज भान जी जो हमारी विधान सभा के सदस्य रहे थे और जब वे लोक सभा के उपाध्यक्ष थे तो मैं भी वहां पर सदस्य था। वे बहुत ही अच्छे व्यक्ति थे।

यह सदन भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सूरज भान के 6 अगस्त, 2006 को हुए दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म पहली अक्तूबर, 1928 को हुआ। वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन में विभिन्न पदों पर रहते हुए राष्ट्र की महती सेवा की। वे 1967, 1977 तथा 1980 में लोक सभा के लिए चुने गये। वे कई संसदीय समितियों के सदस्य तथा अध्यक्ष रहे। वे 1987 में हरियाणा विधान सभा के लिए चुने गये और मंत्री रहे। वे 1996 में पुन: लोक सभा के लिए चुने गये तथा केन्द्रीय कृषि मंत्री बने। उन्होंने लोक सभा के उपाध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया। वे 1998-2003 के दौरान उत्तर प्रदेश, बिहार तथा हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल रहे। वे 2004 में अनुसूचित जाति एवं जनजाति राष्ट्रीय आयोग के अध्यक्ष बने तथा अपने निधन के समय तक इस पद पर बने रहे। वे जातिप्रथा के विरुद्ध लगातार संघर्षरत रहे। वे अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के कल्याण के प्रति सदा समर्पित रहे।

उनके निधन से देश एक विशिष्ट सांसद तथा योग्य प्राशासक की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

स्वामी इन्द्रवेश, भूतपूर्व संसद सदस्य

यह सदन भूतपूर्व संसद सदस्य स्वामी इन्द्रवेश के 12 जून, 2006 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 11 मार्च, 1937 को हुआ। वे एक महान् समाज सुधारक तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के व्याख्याता थे। वे किसानों के सच्चे हितैषी थे। वे जीवन पर्यन्त सामाजिक बुराईयों के खिलाफ लड़े। उन्होंने शिक्षा, विशेषकर महिला शिक्षा पर बल दिया। वे गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति भी रहे। वे 1980 में लोक सभा के लिये चुने गये।

उनके निधन से देश एक सच्चे समाज सुधारक एवं सांसद की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

श्री जय सिंह राठी, हरियाणा विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य

यह सदन हरियाणा विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री जय सिंह राठी के 3 जून, 2006 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 7 जुलाई, 1929 को हुआ। वे 1968 में हरियाणा विधान सभा के लिए चुने गये। उनकी खेलों में विशेष रुचि थी।

उनके निधन से राज्य एक योग्य विधायक की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

बहन शांति देवी, हरियाणा विधान सभा की भूतपूर्व सदस्या

यह सदन हरियाणा विधान सभा की भूतपूर्व सदस्या बहन शांति देवी के 13 सितम्बर, 2006 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 4 मई, 1918 को हुआ। वे 1982 में हरियाणा विधान सभा के लिए चुनी गईं। वे एक निष्ठावान सामाजिक कार्यकर्ता थीं।

उनके निधन से राज्य एक योग्य विधायिका की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

श्री शीश राम, संयुक्त पंजाब विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य

यह सदन संयुक्त पंजाब विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री शीश राम के 8 जुलाई, 2006 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 2 फरवरी, 1925 को हुआ। वे 1957 में संयुक्त पंजाब विधान सभा के लिए चुने गये। उन्होंने गरीबों व दलितों के उत्थान के लिए कार्य किया।

उनके निधन से राज्य एक योग्य विधायक की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

उस्ताद बिस्मिल्ला खान, सुप्रसिद्ध शहनाई वादक

यह सदन सुप्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खान के 21 अगस्त, 2006 को हुए दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 21 मार्च, 1916 को हुआ। उन्होंने अपने चाचा जी जो वाराणसी के 'विश्वनाथ मंदिर' में शहनाई वादक थे, से संगीत की शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने शहनाई को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में अहम स्थान दिलवाया । 15 अगस्त, 1947 को जब भारत आजाद हुआ तो उन्हें ऐतिहासिक लाल किले से अपनी कला का प्रदर्शन करने का गौरव भी प्राप्त हुआ। अपने लम्बे एवं यशस्वी जीवन के दौरान शहनाई सम्राट ने शहनाई वादन से विश्वभर में अपने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

संगीत के प्रति उनकी लम्बी एवं गहरी निष्ठा के फलस्वरूप उन्हें अनेक सम्मान प्राप्त हुए, जिनमें संगीत नाटक अकादमी अवार्ड, तानसेन अवार्ड तथा प्रतिष्ठित पद्म विभूषण शामिल हैं। उन्हें वर्ष 2001 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न" से अलंकृत किया गया। वे हमारी साझी संस्कृति की प्रतिमूर्ति थे। उनके निधन से संगीत जगत में जो शून्य पैदा हुआ है, उसकी भरपाई नहीं हो सकती।

उनके निधन से देश न केवल एक महान् संगीतज्ञ बल्कि एक महान् व्यक्तित्व से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

हरियाणा के स्वतन्त्रता सेनानी

अध्यक्ष महोदय, जैसा मैंने पहले कहा कि स्वतंत्रता सेनानी जिन्होंने देश को आजाद कराने के लिए लड़ाई लड़ी, एक एक करके हमारे को छोड़कर जा रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, यह सदन उन श्रद्धेय स्वतन्त्रता सेनानियों के निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है, जिन्होंने हमारे देश की आज़ादी के संघर्ष में अपनी बहुमूल्य योगदान दिया।

इन महान् स्वतन्त्रता सेनानियों के नाम इस प्रकार हैं :-

1. श्री रिसाल सिंह, गांव जैजैवंती, जिला जींद।
2. श्री महताब सिंह, गांव दगड़ौली, जिला भिवानी।
3. श्री सुलतान सिंह, गांव बाछौद, जिला महेन्द्रगढ़।
4. श्री बालाराम गोंट, गांव लुदेसर, जिला सिरसा।
5. श्री रामजीलाल, गांव खरकड़ी, जिला भिवानी।
6. श्री मोहन सिंह, रतिया, जिला फतेहाबाद
7. श्री प्रीतम सिंह, गांव गिरधारपुरा, जिला कुरुक्षेत्र।

8. श्री प्रभु सिंह, गांव राजली, हिसार

9. श्री चिरंजी लाल, गांव बावड़ौली, जिला रेवाड़ी।

10. श्री संत सिंह, सफीदों, जिला जींद।

11. श्री निहाल सिंह, गांव काकड़ोद, जिला जींद ।

12. श्री घीसाराम, गांव तलवंडी राणा, जिला हिसार।

13. श्री जुगलाल, गांव घसौला, जिला भिवानी।

14. श्री दयाल सिंह, गांव बिचली धमौली, जिला अम्बाला।

15. श्री भगवान सिंह, गांव अटेला कलां, जिला भिवानी ।

16. श्री घमंडीलाल गुप्ता, गांव मुरथल, जिला सोनीपत।

17. श्री पेडा राम, गांव बप्पा, जिला सिरसा।

18. श्री राव गणपत सिंह, गांव गोरियाबास, जिला गुड़गांव।

19. श्री रणबीर सिंह, गांव रतनथल, जिला रेवाड़ी।

20. श्री प्यारेलाल मेहला, रोहतक।

21. श्री जुगलाल, गांव मिरान, जिला भिवानी।

22. श्री पेमा राम, गांव सांजरवास, जिला भिवानी।

23. श्री रामजी लाल, गांव मेरा, जिला भिवानी।

24. श्री रामस्वरूप, गांव लुहाना, जिला रेवाड़ी।

25. श्री मातादीन सैनी, रेवाड़ी।

26. श्री रिसाल सिंह, गांव जटौला, जिला सोनीपत।

27. श्री राजसिंह, गांव बराही, जिला झज्जर।

28. श्री मेहरचन्द, गांव सदलपुर, जिला हिसार।

29. श्री धर्मसिंह, गांव घसौला, जिला भिवानी।

30. श्री नत्थू राम, गांव मम्मेवा, जिला झज्जर।

31. श्री रुद्र सिंह, गांव बोहर, जिला रोहतक।

यह सदन इन महान् स्वतन्त्रता सैनानियों को शत-शत नमन करता है और इनके शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

हरियाणा के शहीद

यह सदन उन वीर सैनिकों को अपना अश्रुपूर्ण नमन करता है, जिन्होंने हमारी मातृभूमि की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए अदम्य साहस का परिचय देते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च

बलिदान दिया।

इन महान् वीर सैनिकों नाम इस प्रकार हैं :

1. सूबेदार रणधीर सिंह, गांव लुदाना, जिला जींद।
2. नायब सुबेदार भागीरथ, गांव शाहपुरिया, जिला सिरसा।
3. नायब सुबेदार राम प्रभोद सिंह, अम्बाला।
4. सहायक उप-निरीक्षक कंवर पाल, गांव गंगेसर, जिला सोनीपत।
5. सहायक उप-निरीक्षक कृष्णपाल, गांव गांगोली, जिला जींद।
6. नायक पवन कुमार, गांव रामपुरा, जिला भिवानी।
7. नायक पवन, गांव टसका, जिला सोनीपत।
8. हवलदार रामफल, गांव कादमा, जिला भिवानी।
9. हवलदार ताराचंद, गांव तुम्बाहेड़ी, जिला झज्जर।
10. हवलदार बलजीत सिंह,गांव सांवड, जिला भिवानी।
11. हवलदार नरेश कुमार, गांव छलौंदी, जिला कुरुक्षेत्र।
12. हवलदार दलीप सिंह, गांव गुलावला, जिला महेन्द्रगढ।
13. हवलदार जगदीश चहल, गांव रूखी, जिला सोनीपत।
14. हवलदार धार सिंह, गांव धुआना, जिला जींद।
15. हवलदार रणबीर सिंह, गांव कासनी, जिला झज्जर।
16. हवलदार मीर सिंह, गांव झाबुआ, जिला रेवाड़ी।
17. सिपाही होशियार सिंह, गांव लाडवा, जिला हिसार।
18. सिपाही श्रीभगवान, गांव सासरौली, जिला झज्जर।
19. सिपाही रोहताश, गांव जांडवाला बागड़, जिला फतेहाबाद।
20. सिपाही संजीव कुमार, गांव गढ़ी छाजू, जिला पानीपत।
21. सिपाही जोगेन्द्र सिंह, गांव बिगोवा, जिला भिवानी।
22. सिपाही हवा सिंह, गांव बस्तली, जिला करनाल।
23. सिपाही सतपाल यादव, गांव जहाजगढ, जिला झज्जर।
24. सिपाही कपूरचन्द, गांव नया गांव (डाबड़ी), जिला रेवाड़ी।
25. सिपाही अशोक देशवाल, गांव गांगौली, जिला जींद।
26. सिपाही सुरजन सिंह, गांव मीरपुर,जिला रेवाड़ी।

27. सिपाही सुरेन्द्र सिंह, गांव ऊण, जिला भिवानी।

28. सिपाही कृष्ण, गांव तुम्बाहेड़ी, जिला झज्जर।

29. सिपाही राम अवतार यादव, गांव खटोटी कलां, जिला महेन्द्रगढ़।

30. सिपाही अशोक कुमार, गांव गतौली, जिला जींद।

31. सिपाही जोगेन्द्र, गांव चिमनी, जिला झज्जर।

32. सिपाही रामफूल, गांव गुडाना, जिला महेन्द्रगढ़।

33. सिपाही रामपाल, गांव छतैहरा, जिला सोनीपत।

34. सिपाही रणधीर सिंह, गांव बडौदा, जिला जींद।

35. सिपाही भूपसिंह, गांव पृथ्वीपुरा, जिला महेन्द्रगढ़।

36. सिपाही जिले सिंह, गांव ढाणी कुतुबपुर, जिला हिसार।

37. सिपाही कर्मवीर, गांव गंगाटेहड़ी, जिला करनाल।

38. सिपाही कुलबीर सिंह, गांव जालखेड़ी, जिला कुरुक्षेत्र।

39. सिपाही पवन कुमार, गांव यजीदपुर, जिला कुरुक्षेत्र।

40. सिपाही कुलवंत सिंह, गांव तंदवाल, जिला अम्बाला।

41. सिपाही मुकेश, गांव गढी राराए नामदार खां, जिला सोनीपत।

42. सिपाही सुलतान सिंह, गांव कलेहड़ी, जिला करनाल।

43. सिपाही योगेन्द्र सिंह, गांव रेवाड़ी खेड़ा, जिला झज्जर।

44. सिपाही छत्रपाल, गांव ढाणी माहू, जिला भिवानी।

45. सिपाही प्रदीप कुमार, गांव दोहली, जिला यमुनानगर।

46. सिपाही अंग्रेज सिंह, गांव श्रीफगढ़, जिला कुरुक्षेत्र।

47. सिपाही नीलम सिंह, गांव टथौंठा, जिला कैथल।

यह सदन इन महान् वीरों की शहादत पर इन्हें शत-शत नमन करता है और इनके शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

बस हादसे

यह सदन 26 जुलाई, 2006 तथा पहली अगस्त, 2006 को हरियाणा सशस्त्र पुलिस कर्मियों एवं जिला सोनीपत के गांव बली कुतुबपुर के मासूम बच्चों के दो अलग-अलग बस हादसों में हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

यह सदन दिवंगतों के शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

मुम्बई तथा मालेगांव में बम विस्फोट

यह सदन 11 जुलाई, 2006 तथा 8 सितम्बर, 2006 को महाराष्ट्र के मुम्बई की उपनगरीय ट्रेनों तथा मालेगांव में क्रमिक बम धमाकों में मारे गये निर्दोष लोगों के दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है। यह एक शर्मनाक एवं घोर अपराध तथा मानवता पर हमला था।

यह सदन आतंकवादियों के इन जघन्य कृत्यों की कड़ी निंदा करता है और शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

मेरठ आग दुर्घटना

यह सदन 10 अप्रैल, 2006 को उत्तर प्रदेश के मेरठ स्थित विक्टोरिया पार्क में भीषण आग दुर्घटना में मारे गये मासूमों के दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

यह सदन दिवंगतों के शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी हमला

यह सदन 30 अप्रैल, 2006 तथा पहली मई, 2006 को जम्मू-कश्मीर के डोडा एवं उधमपुर जिलों में दो अलग-अलग आतंकवादी हमलों में मारे गये निर्दोष लोगों के दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

यह सदन इन आतंकवादी हमलों की कड़ी निंदा करता है और शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

यमुना नौका दुर्घटना

यह सदन 6 अगस्त, 2006 को जिला फरीदाबाद के गांव छायंसा के निकट यमुना नदी में हुई नौका दुर्घटना में मारे गये लोगों के दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

यह सदन दिवंगतों के शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

अन्य

यह सदन हरियाणा के बिजली मंत्री श्री बीरेन्द्र सिंह के चचेरे भाई श्री कर्ण सिंह, हरियाणा के राजस्व मंत्री कैप्टन अजय सिंह यादव के चचेरे भाई श्री अनूप सिंह, हरियाणा विधान सभा के सदस्य डा. शिव शंकर भारद्वाज के भांजे श्री सचिन तथा हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री राजेन्द्र सिंह जून की चाची श्रीमती खजानी देवी के दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

यह सदन दिवंगतों के शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

अध्यक्ष महोदय, दादरी-झज्जर रोड पर खातीवास गांव के पास गत दिनों जिन 17 व्यक्तियों की मौत हुई उन के निधन पर यह सदन गहरा शोक प्रकट करता है और उन शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

अध्यक्ष जी, जैसा कि मैंने पहले शोक प्रस्ताव में भी कहा चौधरी-बंसी लाल जी बहुत समय तक हमारे प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे और मेरा सभी सदस्यों से निवेदन है कि आज वे शोक प्रस्ताव को तो पास करेंगे ही, शोक प्रस्ताव को पास करने के बाद मेरी आपसे दरखास्त है कि आज आब्यूचरी के बाद उनके सम्मान में आज का हाउस पूरे दिन के लिए एडजर्न कर दिया जाए क्योंकि उन्होंने देश की बहुत सेवा की है। आज का बिजनैस है वह कल के लिए रख लिया जाए और जो कल का बिजैनस है वह परसों के लिए रख लिया जाए। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी इस बात से हाउस के सभी सदस्य सहमत होंगे।

डा. सुशील इन्दौरा (ऐलनाबाद,एस.सी.) : अध्यक्ष जी, माननीय मुख्यमंत्री जी जो शोक प्रस्ताव सदन में लाए हैं मैं भी उसमें अपनी तरफ से, अपनी पार्टी के नेता चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी की तरफ से और अपनी पार्टी के सभी सदस्यों की तरफ सम्मलित होता हूं। चौधरी बंसीलाल जी आज इस दुनियां में नहीं रहे और बड़े लम्बे समय तक उन्होंने हरियाणा प्रदेश और इस देश के प्रतिनिधि के तौर पर सेवा की। उनके बारे में बहुत सी बातें विख्यात रही हैं। वे एक सुदृढ लौहपुरुष के रूप में जाने जाते थे। हरियाणा प्रदेश का विकास कराने में जो उनकी अहम् भूमिका रही है उसके लिए वे हमेशा याद किए जायेंगे। सदन के नेता के रूप में और सदन के बाहर और घर में वे बाऊ जी के नाम से मशहूर थे। उनको बाऊ जी के रूप में विशेषकर भिवानी जिले के लोग जानते थे और वे उनसे इतना प्रेम करते थे। लोग उनसे सीधे रूप से जुड़े हुए थे। आज भी अगर भिवानी की सड़कों पर चल कर जाते हैं तो कहीं न कहीं और किसी न किसी रूप में चौधरी बंसीलाल जी छवि के रूप में वे स्वंय खड़े दिखाई देंगे। कल्पना के रूप में या परिकल्पना के रूप में वे हमें उन सड़कों पर जरूर दिखाई देंगे। चौधरी बंसीलाल जिन्होंने हरियाणा प्रदेश के लोगों के लिए बहुत काम किया वे विधान सभा के सदस्य भी रहे और लोक सभा तथा राज्य सभा के सदस्य भी रहे। मुझे भी कभी कभार उनसे मिलने का मौका मिला क्योंकि मैं भी राजनीतिक तौर पर बहुत पीछे रहा था। मुझे भी समय-समय पर उनसे आशीर्वाद लेने का मौका मिलता रहा। मुझे एक बार का वाक्या याद है जब वे हरियाणा प्रदेश के मुख्यमंत्री थे और मैं लोकसभा का सदस्य था तो अचानक वे मुझे कोरीडोर में मिल गए तो मैंने उनसे कहा कि मैं आपके पड़ोस के गांव का हूं तो उन्होंने मुझ से पूछा कि आपका नाम क्या है; मैंने कहा मेरा नाम डा० सुशील इन्दौरा है तो उन्होंने कहा कि हां, तुम्हारा नाम तो बहुत सुना है और उन्होंने मुझे गले से लगाकर आशीर्वाद दिया और कहा बेटा, सदा जिंदगी में फलता फूलता रहे। हो सकता है कि उन्हीं के आशीर्वाद से मैं आज यहां इस मुकाम पर खड़े होकर उनको श्रद्धांजलि दे रहा हूं। ऐसे युगपुरुष और कर्म योद्धा को युगों युगों तक हमारा प्रदेश और देश याद रखेगा। मैं अपनी तरफ से, अपनी पार्टी की तरफ से और अपने नेता चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी की तरफ से उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं और संतप्त परिवार के लोगों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं। ऐसे कर्मठ नेता को जो देश और प्रदेश के विवाद सुलझाया करते थे, कौन याद नहीं करेगा।

हमारे दलितों के मसीहा, दलितों के नेता श्री सूरजभान जी, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री आज इस दुनियां में नहीं रहे और आज हम सब उनको श्रद्धांजलि दे रहे हैं। उन्होंने प्रदेश में विभिन्न पदों पर रहते हुए और देश के भी ऊंचे पदों पर रहते हुए गरीबों की, दलितों की तरफदारी करते हुए, उनके सामाजिक, आर्थिक उत्थान के लिए हमेशा प्रयास किया। उनके निधन से दलित समाज के लोगों को गहरा आघात लगा है। उनके निधन पर मैं अपनी तरफ से, अपनी पार्टी की तरफ से और अपने नेता की तरफ से गहरा शोक प्रकट करता हूं।

[डा. सुशील इन्दौरा (ऐलनाबाद,एस.सी.)]

स्वामी इन्द्रवेश भूतपूर्व संसद सदस्य एक धार्मिक और सामाजिक नेता थे, वे समाज को नई दिशा देने वाले नेता थे, धर्म की बुलन्दियों को ऊपर उठाने वाले नेता थे वे पूर्व में सांसद रहे। इन्द्रवेश के निधन पर मैं अपनी तरफ से, अपनी पार्टी की तरफ से और अपने नेता की तरफ से गहरा शोक व्यक्त करता हूं।

श्री जय सिंह राठी हरियाणा विधान सभा के पूर्व सदस्य और सामाजिक नेता के निधन पर भी हम गहरा शोक प्रकट करते हैं।

बहन शांति देवी जो इस हरियाणा विधान सभा में बहादुरी से महिलाओं की आवाज को बुलंद करती थी, उनके निधन पर भी हम गहरा शोक प्रकट करते हैं।

पंजाब के विधान सभा के सदस्य शीश राम एक अग्रणी नेता थे, उनके निधन पर हम गहरा शोक प्रकट करते हैं। वे इस देश की एक महान हस्ती थे जिन्होंने आजादी से पहले और आजादी के बाद भारतवर्ष का नाम हमेशा ऊंचा रखा। सुप्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खान के निधन पर हम गहरा शोक प्रकट करते हैं। इस शोक प्रस्ताव में जितने हरियाणा के स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों के नाम दिए गए हैं उनके निधन पर हम गहरा शोक प्रकट करते हैं । बस दुर्घटना में मारे गए बच्चों, मुम्बई के मालेगांव में मारे गए लोगों, मेरठ की आग में मारे गए लोगों, कश्मीर में आतंकवादी हमले में मारे गए लोगों, यमुना नौका की दुर्घटना में मारे गए लोगों, वित्त मंत्री के चचेरे भाई श्री कर्ण सिंह, कैप्टन अजय सिंह यादव के चचेरे भाई श्री अनूप सिंह, हरियाणा विधान सभा के सदस्य डा० शिव शंकर भारद्वाज के भांजे श्री सचिन, श्री राजेन्द्र सिंह जून की चाची श्रीमती खजानी देवी के निधन पर हम गहरा शोक प्रकट करते हैं और मैं एक बात और कहना चाहूंगा कि माननीय मुख्यमंत्री के हल्के के अबोहर गांव में 8 मासूम बच्चे जो जिंदा जल कर मर गए थे और माननीय मुख्यमंत्री जी भी वहां गए थे, उनके निधन पर भी हम गहरा शोक प्रकट करते हैं। क्योंकि यह परम्परा रही है कि माननीय मुख्यमंत्री जी जहां ऐसी दुर्घटनाएं होती हैं वहां जाते हैं। शोक प्रस्ताव के माध्यम से मैं कहना चाहता हूं कि जो भी सड़क हादसे होते हैं और आग की वजह से दुर्घटनाएं होती हैं सांत्वना के तौर पर या उन लोगों के दुखों को मिटाने के लिए उनमें सम्मलित होकर किसी न किसी रूप में उनके दुखों को बांटने की कोशिश करते हैं और सरकार की तरफ से उनको मुआवजा भी दिया जाता है। हमारे मुख्यमंत्री जी बहुत सी जगहों पर स्वयं जाते हैं और उनकी मदद करते हैं ताकि उनको गहरे दुख से निकलने में मदद मिले। ऐसे में जहां-जहां मुख्यमंत्री जी या हमारे मंत्रीगण जाते हैं वहां अच्छी मदद करने का प्रयास किया जाता है ताकि उन लोगों का दुख कम किया जा सके। इस बारे में मैं एक सुझाव देना चाहता हूं कि जहां कहीं भी हमारे प्रदेश में इस तरह की दुर्घटनाएं हों उस बारे में सरकार की तरफ से जो मदद की जाती है। उसके लिए सरकार को एक नीति बनानी चाहिए और उसी नीति के तहत सभी की मदद करनी चाहिए। चाहे कहीं रेल दुर्घटना की बात हो, चाहे सड़क हादसे की बात हो और चाहे आगजनी की बात हो। इस बारे में सरकार को प्रभावित लोगों की मदद करने के लिए नीति बनानी चाहिए ताकि किसी के साथ किसी तरह का भेदभाव न हो। अंत में मैं फिर से कहना चाहूंगा कि जो क्षति हमारे प्रदेश को और देश को चौधरी बंसी लाल जी के और चौधरी सूरजभान जी के निधन से हुई उसकी पूर्ति नहीं हो सकती क्योंकि उन्होंने प्रदेश के लिए और देश के लिए जो कुछ किया है वह हमेशा याद रखा जायेगा। इसके साथ ही मैं हमारे नेता चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी की तरफ से और

हमारी पार्टी की तरफ से शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनको यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे। धन्यवाद।

शिक्षा मन्त्री (श्री फूलचंद मुलाना) : माननीय अध्यक्ष जी, हरियाणा विधान सभा के लिए आज बहुत ही दुखद समय है कि सदन के नेता चौधरी भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी ने जो शोक प्रस्ताव आज सदन में रखा है उसमें लगभग 5-6 पूर्व विधायक इस सदन के रहे हैं । आज हरियाणा विधान सभा के सभी सदस्य बहुत दुखद हैं क्योंकि माननीय चौधरी बंसी लाल जी जिनको हरियाणा का निर्माता के नाम से जाना जाता है आज वे इस संसार में नहीं रहे। अध्यक्ष जी, बंसी लाल जी के साथ मुझे भी बहुत समय तक काम करने का अवसर मिला। 1972 में सबसे पहली बार जब मुझे कांग्रेस पार्टी के टिकट पर एम.एल.ए. का चुनाव लड़ने का अवसर मिला उस समय मुख्यमंत्री चौधरी बंसी लाल जी के योगदान से ही मुझे इस सदन में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। चौधरी बंसी लाल जी अपनी बात के धनी थे और निर्णय के कठोर थे। जो निर्णय वे ले लेते थे उस निर्णय को वे बदलते नहीं थे। मैंने उनको मौके पर अधिकारियों को आदेश देते देखा है। कोई भी जनहित का काम हो उसको वे तुरंत प्रभाव से करवाते थे। उसकी मिसाल है जब हरियाणा हाई वे बन रहा था उस समय हमारा पंजाब सरकार के साथ झगड़ा चल रहा था। उस समय हमने देखा कि किस तरह से मौके पर चीफ इंजीनियर को भेप दिखाकर बंसी लाल जी आदेश दे रहे थे कि फलानी तारीख को मैंने आना है और उस तारीख तक यह हाई वे बनना चाहिए, चाहे चार पैसे ज्यादा खर्च हो जायें। उस समय मेन अधिकारी चीफ इंजीनियर ही होता था अब तो बहुत से अधिकारी हो गये हैं और जो समय दिया था उसी समय में हरियाणा हाई वे बन गया था। अध्यक्ष जी, चौधरी बंसी लाल जी अपनी बात में स्पष्ट थे। वे जनता से कहते थे कि मैं तुम्हारा डाकिया हूं। लेकिन नालायक डाकिया नहीं हूं जो नहर के किनारे बैठकर तुम्हारी चिट्ठिया फाड़ डाले। मैं तुम्हारी डाक पर अमल करता हूं। वे कभी-कभी अपने साथियों को हंसाते भी थे। एक बार वे कहने लगे कि अकालियों ने मुझे स्वर्ण मंदिर में बुला लिया, मुझे सिरोपा और कृपाण भेंट की गई और उसके बाद मुझे कहने लगे कि चौधरी साहब आपने हमारे साथ बहुत ज्यादती की, मैंने पूछा भाईयो मैंने आपके साथ क्या ज्यादती की तो अकालियों ने कहा कि हमने करनाल में धरना दिया था उस समय जब आपने हमें जेलों में बंद किया तो जेल में हमें मच्छरों ने बहुत काटा। इस पर मैंने आकालियों को कहा कि भाई मैं भी अकाली हूं तो उन्होंने कहा कि चौधरी साहब आप अकाली कैसे हो तो मैंने कहा कि पंजाब का अपना झगड़ा था आप में अकल नहीं थी जो आप हरियाणा के करनाल शहर में आकर धरना दे रहे थे। तुम अकाली हो और तुम में अकल नहीं है इसलिए तुमने ऐसा किया और अकल मुझ में भी नहीं है इसलिए मैंने तुम्हे जेलों में बंद करवाया। इसलिए मैं भी अकाली हो गया ना, इस प्रकार वे हंसाते भी थे। वे कई बार लोक सभा, राज्य सभा तथा हरियाणा विधान सभा के सदस्य रहे। अध्यक्ष महोदय, आज हरियाणा उनके कुशल नेतृत्व से वंचित हो गया है। हम उनको इसी सदन में खड़े हो कर जिसमें उन्होंने हमें भिजवाया था, मैं अपनी ओर से तथा अपने परिवार की ओर से उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि ऐसे पुरुष हरियाणा में बार-बार पैदा हों ताकि हरियाणा का विकास हो सके। वे हरियाणा प्रदेश में पैदा हुए। उनको विकास पुरुष और लौह पुरुष कहा जाता था। अध्यक्ष महोदय, चौधरी सूरज भान जी के साथ मेरा बहुत ही निकट का सम्बन्ध रहा है। वे मेरे जिले से थे और 1972 में मेरे साथ ही उन्होंने अपना पहला चुनाव लड़ा था, उससे पहले वे एम.पी. थे। वर्ष 1972 के चुनाव में वे मुझ से हार गए थे जब कि 1987 के चुनाव में मैं उनसे हार गया था लेकिन हमारे सम्बन्ध हमेशा ही बहुत

[शिक्षा मन्त्री (श्री फूलचंद मुलाना)]

अच्छे रहे और हम अक्सर मिलते रहते थे। जहां कहीं पर भी गरीब आदमी की बात आती थी तो हम मिल कर संघर्ष भी करते थे और आवाज भी उठाते थे। इस सदन के नेता ने जो शोक प्रस्ताव सदन में रखा है मैं अपने आप को उसके साथ जोड़ता हूं। इनके साथ ही श्री बीरेन्द्र सिंह, फाईनैंस मिनिस्टर के सम्बन्धी, हमारे शर्मा जी के और कैप्टन अजय यादव जी के सम्बन्धियों के नाम इस शोक प्रस्ताव में शामिल करके अच्छा काम किया है। कैप्टन अजय सिंह के एक और चाचा ससुर श्री कंवर सिंह 12 सितम्बर को गांव गोकलगढ़ जिला रिवाड़ी में 54 वर्ष की आयु में अपना शरीर पूरा करके चले गए हैं मैं निवेदन करूंगा कि उसका नाम भी शोक प्रस्ताव में जोड़ लिया जाए। अध्यक्ष महोदय, यह संसार तो चलायमान है और जो आया है उसने जाना है। अध्यक्ष महोदय, मुख्य मन्त्री जी ने जो शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया है मैं अपने आप को उसके साथ जोड़ता हूं और अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं।

श्री एस.एस. सुरजेवाला (कैथल): अध्यक्ष महोदय, मैं स्वर्गीय चौधरी बंसी लाल जी तथा इस शोक प्रस्ताव में शामिल अन्य गणमान्य व्यक्तियों के निधन पर शोक प्रकट करने के लिए तथा उनको श्रद्धांजलि पेश करने के लिए खड़ा हुआ हूं। चौधरी बंसी लाल जी तथा उनके परिवार के साथ बहुत लम्बे समय तक जुड़े रहने का मौका मुझे मिला है। वर्ष 1977 में चौधरी बंसी लाल जी के स्वर्गीय पुत्र चौधरी सुरेन्द्र सिंह जी हरियाणा विधान सभा के मैम्बर थे और मैं भी मैम्बर था। 1977 से 1980 तक हम इकट्ठे एक फ्लैट में रहते थे और हर हफ्ते दिल्ली जाते थे और चौधरी बंसी लाल जी के साथ घण्टों बैठकर समय बिताते थे। श्रीमती इन्दिरा गांधी से हम सब इकट्ठे मिलने के लिए जाते थे। जब चौधरी बंसी लाल जी हरियाणा के मुख्य मन्त्री बन कर आए तो मुझे उनके मंत्रिमण्डल में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उससे पहले वे भारत सरकार में डिफैंस मिनिस्टर, परिवहन मन्त्री और रेल मन्त्री भी थे तब भी हम उनसे बहुत मिलते थे। वर्ष 1967 में भी वे इस विधान सभा के सदस्य थे और मैं भी सदस्य था। मेरा सौभाग्य है कि दो तीन दशक तक मैं उनके साथ जुड़ा रहा। उनका नाम हरियाणा के विकास के साथ जुड़ा हुआ है और उनको विभिन्न नामों से जाना जाता है। उन्हें लौह पुरुष, विकास पुरुष तथा बहुत ही अच्छे एडमिनिस्ट्रेटर के नाम से जाना जाता है। उनमें बहुत बड़ी विशेष बात थी कि बचपन से लेकर अपने निधन तक वे कांग्रेस पार्टी से जुड़े रहे। कांग्रेस पार्टी बदलने या कांग्रेस पार्टी छोड़ने का ख्याल कभी उनके मन में नहीं आया। जब वे मुख्य मन्त्री थे तब उन्होंने कभी भी किसी काम में अपना नाम नहीं लिया। वे हमेशा कहते थे कि श्रीमती इन्दिरा गांधी ने यह रुपया मुझे आप लोगों की सेवा करने के लिए दिया है। मैं तो बीच में काम करने वाला हूं और आपका नौकर हूं। उनके जो आदेश होते हैं उनसे मैं आपकी सेवा करता हूं। चौधरी बंसी लाल जी स्वर्गीय इन्दिरा जी और स्वर्गीय राजीव गांधी जी के साथ भी रहे हैं और उनके, उनके साथ बहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध थे। बंसी लाल जी ने भिवानी जैसे रेतीले इलाके की शक्ल ही बदल कर रख दी थी। वे बहुत ही बढ़िया मुख्यमंत्री और ऐडमिनिस्ट्रेटर थे। उन्होंने ऊंचे-ऊंचे रेतीले टिब्बों पर लिफ्ट लगाकर पानी चढ़ाया था और उस एरिया को समतल करवा दिया था। उन्होंने अपने राज में हर गांव में वाटर सप्लाई स्कीम लगवाई थी, जिसके बारे में हम सपने में भी नहीं सोच सकते थे। एक बार जब कांग्रेस की सरकार मिड टर्म में गिर गई थी उस वक्त इन्दिरा गांधी जी ने कहा था कि कैसे हरियाणा गार्डन हो सकता है और उन्होंने उस वक्त हरियाणा के गांवों को सड़कों से जोड़ा था और हर गांव में बिजली पहुंचाई थी। अध्यक्ष महोदय, चौधरी बंसी लाल जी को बहुत गहरा आघात तब पहुंचा जब उनके बेटे सुरेन्द्र सिंह

जी का निधन हुआ और वे उस सदमें से बाहर ही नहीं आ सके, जिसकी वजह से वे हमारे से जुदा हो गए। अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से अपने साथियों की तरफ से उनके परिवार के सदस्यों को उनके जाने से जो आघात पहुंचा है, परमपिता से प्रार्थना करता हूं कि उनको इस कभी न पूरा होने वाले घाटे को सहने की शक्ति प्रदान करे। चौधरी बंसी लाल जी हरियाणा के लिए एक मॉडल हैं और वर्तमान सरकार उनके जीवन से प्रेरणा लेकर हरियाणा को आज ऊंचाईयों पर ले जा रही है।

अध्यक्ष महोदय, सूरजभान जी बहुत ही अच्छे व्यक्ति थे। वे अनुसूचित जातियों और जन जातियों के कल्याण के प्रति सदा समर्पित रहे हैं। उनके निधन से हमने एक महान् व्यक्ति को खो दिया है। इसी तरह से स्वामी इन्द्रवेश जी एक आदर्श व्यक्ति थे और वे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार से जुड़े रहे। जहां से आप भी जुड़े हुए हैं। उनके निधन से हमें बहुत ही दु:ख पहुंचा है। अध्यक्ष महोदय, इसके साथ हरियाणा के भूतपूर्व सदस्य श्री जय सिंह राठी भी आज इस दुनिया में नहीं रहे हैं उनके निधन से हमें बहुत दु:ख पहुंचा है।

अध्यक्ष महोदय, बहन शान्ति देवी जी, एक निष्ठावान सामाजिक कार्यकर्त्ता थी उन्होंने अपनी पढ़ाई लाहौर से की थी और वे आजीवन कुंवारी रही और समाज की सेवा करती रही। उन्होंने समाज कल्याण के लिए एक संस्था बना रखी थी और वह संस्था आज भी बहुत अच्छा काम कर रही है। उनका हमारे परिवार से पिछले 40 सालों से अच्छा संबंध था और मैंने आज तक उन जैसी संत चाहे वह आदमी हो या औरत हो कोई नहीं देखा है। वे बहुत बड़ी संत थी। उनके निधन से हमें बहुत दु:ख पहुंचा है।

अध्यक्ष महोदय, इसी तरह से उस्ताद बिस्मिल्ला खान, सुप्रसिद्ध शहनाई वादक आज हमारे बीच में नहीं रहे हैं। उन्होंने अपनी शहनाई से पूरी दुनिया में नाम कमाया था और बहुत ख्याति प्राप्त की थी। वे बहुत बड़ी उम्र में हमारे बीच में से चले गए है। हमें उम्मीद है कि भगवान उनके पुत्र को इस दु:ख को सहने की शक्ति प्रदान करेगा। हरियाणा के स्वतंत्रता सेनानी, हरियाणा के बहादुर शूरवीर जो हिन्दुस्तान की हिफाजत के लिए लड़े, आज हमारे बीच में नहीं रहे हैं। इसी प्रकार से हमारे पुलिस के नौजवान जोकि बस दुर्घटना में मारे गये हैं, उनके प्रति भी मैं अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं। इसी तरह से फरीदाबाद की बोट ट्रैजडी में मारे गये लोग, बोम्बे में और कश्मीर में उग्रवादियों द्वारा की गयी कार्रवाईयों में मारे गये लोग, शहीद हुए लोगों के प्रति भी मैं अपनी संवेदना प्रकट करता हूं। मै परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह उनके परिवारों को इस दुख को सहन करने की शक्ति दे। अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी ने यह एक बहुत अच्छी शुरुआत की है कि चौधरी बंसीलाल जो इतने लम्बे अरसे तक मुख्यमंत्री रहे, उनके सम्मान में, उनकी इज्जत करने के लिए आज हाउस को स्थगित करने का फैसला किया है। हमारे साथी डॉ० इन्दौरा साहब ने बोलते हुए कहा कि हादसे में, एक्सीडैंटस में मरने वालों लोगों के लिए सरकार को नोर्म्ज बनाने चाहिए। अध्यक्ष महोदय, अगर वर्तमान सरकार को देखा जाए तो डेढ़ पौने दो साल में शायद एक भी वाक्या नहीं होगा जब कोई हादसा हुआ हो या दुर्घटना हुई हो और मुख्यमंत्री जी ने खुलकर उस परिवार के लोगों की भरपूर मदद न करी हो इसलिए मैं समझता हूं कि हमारे माई डॉ० साहब की पार्टी को इस सरकार से इस बारे में सीखना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, इन शब्दों के साथ मैं सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं। धन्यवाद।

कृषि मंत्री (सरदार एच.एस. चट्ठा) : सत्कार योग स्पीकर साहब, मैं अज्ज उस बोली विच बोलांगा जिदे विच मैनूं चौधरी बंसी लाल बहुत प्यार नाल सुणदे सी। 1972 दे विच चौधरी बंसीलाल जी ने मैनू टिकट दित्ती। मैं तें चौधरी फूलचन्द मुलाना दोनों नाल-नाल लगदे हल्कियां विच्चों जिल के आए अते मैं उन्हां खुश किस्मत आदमियां दे विच्चो सां जेहड़े एम.एल.ए. बणदियां सार ही मंत्री बणिया। मैं उन्हां खुशकिस्मत आदमियां विच्चों सां जिन्हानूं बंसी लाल जी ने सद के इह गल आक्खी कि देख भाई चट्ठा, मैं नहरां कढणियां ने। तूं तेरा बाप-दादा नहरां दे जम्मे होए हो मैं ऐह चांहदा हां कि नहरां दे निकलन विच्च कोई कोताही न होवे। मैनू ओह समां याद है अदों मैं मन्त्री हुन्दे होया जूई कैनाल, इन्दिरा गांधी कैनाल अते लिफ्ट इरीगेशन दी साईट ते चीफ इन्जीनियर पाठक दे नाल जा के तम्बुआं विच्च रएया करदे सी। दिन-रात कम्म कीता। चौधरी बंसी लाल रोज पुच्छया करदे सी कित्थे अपड़े, की गल्ल है, मैं लोकां नाल वादा कीता है कि लोकां नूं चलदा पानी दियांगा ते खेता विच चलदा पानी पहुंचावांगा। स्पीकर सर, ऐस हिसाब दे विच्च मैनूं उन्हां दे नाल बहुत नेड़े रहण दा मौका मिलिया। उन्हां दा कोई पता नहीं सी हुन्दा कि बारहां बजे रात नूं पुच्छ लैणा कि बई सुनया है सीमैंट दी कमी सी, सुणाओ कलाणी नहर ते सीमेंट दा की हाल है। उन्हां दा कोई पता नहीं सी लगदा कि कदों की गल्ल पुच्छ लैण। मैनू एक समां याद है कि पंजाब दी ट्रक यूनियन ते हरियाणा दी ट्रक यूनियन डेरा बस्सी विच्च इकट्ठी सी। हंस राज शर्मा पंजाब दे मंत्री सन ते उत्थों एम.एल.ए. वी सन। हंस राज शर्मा ने कह दित्ता कि हरियाणा दा ट्रक उत्थों माल नहीं लदेगा। ओस वेले चौधरी साहब ने ज्ञानी जैल सिंह नूं किहा कि ज्ञानी जी, ऐह इक्का सूबा सी अज्ज दो-दो हो गए ने, इन्हां भरावां नूं जेहड़े सन 1922 तों इकट्ठे कम्म कर रहे हन इन्हानूं वी इत्थे ही कम्म करण दयो। ओहना दी ऐह गल्ल ना ज्ञानी जी ने सुनी ते ना शर्मा जी ने सुनी। चौधरी साहब ने उन्हां नूं दो दिनां दा समां दित्ता कि दो दिनां दे विच्च विच्च ही इह फैसला करो ते हरियाणा दे ट्रकां नूं लदवाओ। जदों उन्हांने ट्रक नहीं लदवाए ते चौधरी साहब ने पंजाब दा कोई ट्रक दिल्ली तों अग्गे नहीं आण दित्ता। पंजाब दा जो ट्रक जित्थे खलौता सी उत्थे ही खलौता रिहा। ओही ज्ञानी जैल सिंह ते ओही हंस राज शर्मा चल के चौधरी बंसी लाल जी कोल गए ते फिर बैठके समझौता होया ते कम्म चल्लेया। ए ओ ही चौधरी बंसी लाल सन जिन्हांनूं एक वारी पंजाब दे अकालियां ने कहया कि चौधरी साहब दिल्ली किददां उतरोगे तां उन्हांने कहया कि मैं 6 महीने दे विच अलग सड़क कढ के देयांगा। 64 पुल बणे, छे महीनेयां दे विच विच, ए इक रिकार्ड है। जे ए आख्या जावे कि असल हरियाणा देण वाला ओ सी तां इदे विच कोई शक दी गल्ल नहीं। हरियाणा अलफ ने बणाया, बे ने बणाया लेकिन हरियाणा नूं उच्ची थां ते ले जाण दा कम चौधरी बंसी लाल दा सी, होर किसे दा नहीं। हरियाणा नूं ऐह शक्ल देण दा कम ते इस थां ते पहुंचाण दा कम ते हरियाणा नूं हिंदुस्तान दे नक्शे ते पहुंचाण दा कम चौधरी बंसी लाल दा सी। होर किसे दा कम नहीं। मैनू याद है इक दिन चौधरी साहब नें ट्रांसफरां बंद कर दित्तियां। कौशल साहब ऐडवोकेट जनरल होंदे सन। बंसी लाल जी जगन्नाथ कौशल साहब नूं घर जाके ऐडवोकेट जनरल बणा के आये सी। ओने एक शर्त रखी सी कि थल्ले वाला स्टाफ मेरी मर्जी दा होयेगा। बंसी लाल जी ने केहा कि मैं स्टाफ दे मामले विच कुछ नहीं कहांगा पर कोर्ट तों मैंनू बचाई रखीं। ऐक वारी कौशल साहब चौधरी साहब दे कोल आए। नॉर्मली चौधरी साहब कौशल साहब दे घर जांदे सन क्योंकि कौशल साहब चौधरी साहब तों उम्र विच वड्डे सी। इस करके उन्हां दा मान करदे सन क्योंकि कट्ठे राज्य सभा विच रहे सी। चौधरी साहब ने कौशल नूं कहा कि धाबू जी तुसीं किवर तकलीफ कीत्ती। उन्हांने केहा कि अज मेरी मां नाभे तों आई है तां मैं मां दे कम आया हां।

उन्होंने केहा कि एहो जिहा की कम है तां उन्होंने किहा कि मेरी मां ने आख्या है कि नर्स दा तबादला कर दयो। चौधरी साहब ने कहया कि बाबू जी तबादले तां मैं बंद कर दित्ते। तिन महीने बाद मै तबादले खोलांगा ते मां दे धर ट्रांसफर आर्डर भेज देंआंगा। ऐसा डिसाइडर सी। फैसले जो लेंदा सी इक वारी अफसर नूं कम कहंदा सी। दूजी दफा भुड़के कम्म नहीं कहंदे सी। अर्सी वी उन्हां वजीरां विच्चों सा जो किसे अफसर नूं कम कहंदे सी तां ओ एक जवाब देंदे सी कि देख के दसांगे कि ए कम हो सकदा है कि नहीं हो सकदा है फिर बाद विच दसदे सी कि ऊह कम हो सकदे या नहीं हो सकदा। हो सकदै तां क्यों हो सकदै जे नहीं हो सकदा तां क्यों नहीं हो सकदा ? उस महान पुरुष नूं अगर मैं हरियाणा वास्ते मिनी रब वी कहवां तां ओदे विच कोई शक नहीं होवेगा। अज उन्हां दे चले जाण तो बाद ऐ लगदा है कि परमात्मा करदा ओह सुरेन्द्र तो पहले चले जांदे। बदकिस्मत बाप ओ होंदा है जिदे सामणे ओदे पुत्तर नूं लम्बू लगे। खुशकिस्मत बाप ओ होंदा है जिनूं ओदा पुत्तर लंबू लावे। उन्हां दे सामणे उन्हां दा हीरा चला गया। उसदे जाण तो बाद ओ अपणे पैरां तो नहीं खलो सके। उन्हांदे चले जाण तों बाद हरियाणा ने इक महान लीडर खो दित्ता है जिस लीडर ने हरियाणा नूं इक नवां हरियाणा बणाया। मैं होर कहण दे काबिल हां कि नहीं। मेरा होर कहण दा अधिकार है कि नहीं या मैं अपणे अधिकार तो अगे चलण लगा हां मैं इक प्रार्थना परिवार दे अगे करांगा कि बंसी लाल जी दे मरण तों बाद उन्हां नूं नींवा ना होण दयो। इन्हां अखरां नाल मैं चौधरी बंसी लाल ते दूजेयां साथियां नूं ते जेड़े शहीद ने, उन्हांनूं श्रद्धांजलि देंदा हां ते उस परिवार नूं विनती करदा हां कि चौधरी बंसी लाल दे नां नूं हिंदुस्तान दे नक्शे तों न मिटाओ। मैंनू याद है कि इंदिरा गांधी ने बम्बे बोलदयां इक वारी केहा सी कि ओ हिंदुस्तान दे चीफ मिनिस्टरों अगर डिवैलपमैंट दी गल सिखणी है तां चौधरी बंसी लाल तों सिखो। ओहो बंसी लाल जी अज नहीं है। परमात्मा करे उन्हां दा स्वर्गा विच वासा होवे। इन्हां अखरां नाल क्षमा मंगदा हां, जय हिंद।

परिवहन मंत्री (श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला) : स्पीकर सर, श्रीमती मीना मंडल, माननीय मंत्री महोदया की सिस्टर इन ला श्रीमती सुल्तानी देवी पत्नी श्री निरंजन सिंह का भी देहान्त हुआ है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि उनका नाम भी इस शोक प्रस्ताव में जोड़ लिया जाए।

श्री अध्यक्ष : ठीक है।

श्री कर्ण सिंह दलाल (पलवल): स्पीकर सर, जो शोक प्रस्ताव माननीय मुख्यमंत्री जी ने आज इस सदन में रखा है, मैं उस शोक प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। स्वर्गीय श्री सूरजभान जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, जय सिंह राठी, श्रीमती शांति देवी, हरियाणा विधान सभा की भूतपूर्व सदस्या, श्री शीश राम, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान एवं हरियाणा के शहीद एवं विभिन्न दुर्घटनाओं में जो लोग हमें छोड़कर चले गए हैं मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। अध्यक्ष महोदय, चौधरी बंसीलाल जी जो लम्बे अर्से तक हरियाणा प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे, देश में और भारत सरकार में कई पदों पर मंत्री रहे। हरियाणा जैसे प्रदेश का नाम चौधरी बंसीलाल जी की वजह से हमारे देश में ही नहीं पूरी दुनिया में जाना गया। आपको हम सबको एक बात याद आती है जब हरियाणा प्रदेश बनाया गया था तो एक मखौल सा हरियाणा के बारे में लोगों ने उड़ाया था दूसरे प्रदेशों में यह कहा जाता था कि यह प्रदेश जो बना है क्या यह प्रदेश चल पायेगा और अपने सरकारी भुलाजिमों को तनख्वाह दे पायेगा। अध्यक्ष महोदय, चौधरी बंसीलाल ने अपनी सोच से अपने प्रयासों से और लोगों के सहयोग से हरियाणा प्रदेश को एक ऐसे मुकाम पर लाकर खड़ा कर दिया कि उन दिनों अखबारों में एक कहावत छपा करती थी और लोगों में यह चर्चा हुआ करती थी कि जब रात के अंधेरे में हवाई

[श्री कर्ण सिंह दलाल]

जहाज देश की सीमा में प्रवेश करते थे और जब नीचे बिजली की रोशनी टिमटिमाती थी तो हवाई जहाज में बैठे यात्री यह कहते थे कि शायद चौधरी बंसीलाल का हरियाणा आ गया है। अध्यक्ष महोदय, बहुतेरे ऐसे लोग भी होते हैं जो साधारण परिवार में जन्म लेते हैं साधारण माहौल में पढाई-लिखाई करते हैं। चौधरी बंसीलाल जी की भी यही विशेषता थी कि वे हमेशा जनसभा के माध्यम से लोगों से आह्वान किया करते थे मैं मुख्यमंत्री आपका बनाया हुआ हूं। मैं कोई राजा-महाराजा या बड़े परिवार में जन्म लेकर नहीं आया बल्कि किसान के घर काम करके आया हूं। किसान के घर जन्म लेकर पढाई-लिखाई करके आया हूं। एक अच्छे प्रयास के मालहत इस प्रदेश को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा हूं। अध्यक्ष महोदय, ऐसे लोग भी इस देश में हैं जो राजनेता, कितने ही बड़े-बड़े प्रदेश के मुख्यमंत्री तक रहे लेकिन उन्हें कोई आज जानता तक नहीं है। चौधरी बंसीलाल जी ऐसी प्रतीभा के मालिक थे मुख्यमंत्री होते थे या भारत सरकार में किसी विभाग के मंत्री होते थे तो वह विभाग उनके नाम से चला करते थे। अध्यक्ष महोदय, जब वे भारत सरकार में रेल मंत्री हुआ करते थे तो जब कहीं पर भी यह चर्चा हुआ करती थी कि आज चौधरी बंसीलाल जी फैलाने रेलवे स्टेशन पर पहुंच गये तो सरकारी विभाग में हड़कंप मच जाया करता था ट्रैने जो लेट चला करती थी वे सही समय पर चलने लग जाया करती थी। हरियाणा प्रदेश के अन्दर मुख्यमंत्री होते हुए अधिकारियों के अन्दर या लोगों के अन्दर जो प्रभावशाली तरीका सरकार चलाने का था उसकी एक मिसाल है और जब तक यह प्रदेश कायम रहेगा उन मिसालों को याद किया जाता रहेगा। अध्यक्ष महोदय, ऐसे भी लोग इस दुनिया में हुए हैं जो सत्ता प्राप्ति करने के बाद और तरह के होते हैं और सत्ता से हटने के बाद और तरह के होते हैं। चौधरी बंसीलाल का हमने वह समय भी देखा जब शाह कमीशन में उनकी पेशी हुआ करती थी फाईलों के गट्ठे शाह कमीशन में प्रस्तुत किये जाते थे और अध्यक्ष महोदय, दूसरे पक्ष के वकील हुआ करते थे वे चौधरी बंसीलाल जी से सवाल पूछते थे कि चौधरी बंसीलाल जी आपकी फाईलों में आपके पी.ए. और आपके ओ.एस.डी. ने यह लिखा है The Hon'ble Chief Minister has approved क्या आप यह मानते हैं जितने भी हुकम जारी हुए हैं वे आपकी सहमति से जारी हुए हैं तो चौधरी बंसीलाल जी ने ऑन रिकार्ड शाह कमीशन को यह कहा था कि मेरे पी.ए.या मेरे ओ.एस.डी. ने किसी भी फाईल पर यह लिखा है कि, "The Hon'ble Chief Minister has approved." तो वह हुकम मेरा हुकम माना जाए किसी स्टाफ या किसी अधिकारी या किसी तीसरे आदमी का नहीं हो सकता क्योंकि मेरे पूछे बिना किसी फाईल पर कोई कुछ नहीं लिख सकता। यह बात उन्होंने ऑन रिकार्ड कही है। ये सभी तथ्य आज भी मौजूद हैं। जितने भी आदेश चाहे किसी अधिकारी ने किए हैं अगर आप उन्हें गलत भी मानते हैं तो किसी अधिकारी ने लिखा हैं तो ये मेरा हुकम हैं आपने जो सजा देनी है उसकी सजा आप मुझे दें। अध्यक्ष महोदय, इस विधान सभा के अंदर 17 सालों से लगातार आप और हम चले आ रहे हैं और भी कई माननीय सदस्य यहां बैठे हैं जो लगातार कई सालों से विधान सभा में आ रहे हैं। किसी भी पार्टी की सरकार रही हो, विधान सभा की गरिमा को चौधरी बंसीलाल जी ने हमेशा बनाए रखा और उन्होंने ऐसा करके हमेशा एक मिसाल कायम करने की कोशिश की। हरियाणा की समस्याओं को न केवल वे उठाते बल्कि उन समस्याओं के बारे में अच्छे सुझाव दिया करते थे और उन समस्याओं का समाधान बताने की कोशिश किया करते थे कि पानी की समस्या का यह समाधान है और बिजली की समस्या का यह समाधान है। जो दूसरे नेता थे जानबूझकर सदन में उनसे टकराने की कोशिश करते थे लेकिन बंसीलाल जी ने कभी भी स्पीकर की कुर्सी के

सामने, कभी भी सदन के सामने, सदन की गरिमा को तोड़ने की कोशिश नहीं की और हमेशा सदन की गरिमा को बनाए रखा और कभी भी आपे से बाहर आकर मर्यादा को नहीं तोड़ा। अध्यक्ष महोदय, इस सदन को, हरियाणा की जनता को, देश की जनता को आज जरूरत है कि बंसीलाल जैसे बच्चे इस देश में पैदा हो, बंसीलाल जैसी मजबूत, अच्छी सोच के लोग इस देश में शासन चलाएं। राजनीति में मन मुटाव तो होते रहते हैं। चौधरी बंसीलाल जी ने मेरे जैसे और भी न जाने कितने साधारण परिवार के लोगों को इस हरियाणा की राजनीति में घर से उठा लाकर किसी को विधायक बनाया, किसी को सांसद बनाया। अध्यक्ष महोदय, न केवल विधायक और सांसद बनाया बल्कि अच्छा आचरण, अच्छी सोच को एक मर्यादा के तहत कायम करना और अपने सभी साथियों में ये उस अच्छी सोच को लाने की कोशिश किया करते थे। अध्यक्ष महोदय, मैं ज्यादा न कहते हुए अपनी तरफ से, अपने परिवार की तरफ से और सभी माननीय सदस्यों की तरफ से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। माननीय मुख्यमंत्री जी पिछले दिनों दिल्ली में चौधरी बंसीलाल जी के सम्मान में कुछ अच्छी बातें कह रहे थे इसलिए मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि चौधरी बंसीलाल का नाम, उनकी सोच उनके व्यवहार को अगर हम आम आदमी में लेकर जाएंगे तो मैं समझता हूं कि एक अच्छा हरियाणा बनाने में हमें मदद मिलेगी। चड्ढा साहब ने जैसे कहा और मुझे भी यह बात कहने में संकोच नहीं कि चौधरी बंसीलाल एक ऐसे सदस्य नहीं थे कि वे मात्र चौधरी बंसीलाल के बेटों में,उनके रिश्तेदारों में ही सीमित रहे इसलिए मैं चौधरी बंसीलाल के परिवार के सदस्यों से निवेदन करना चाहता हूं कि चौधरी बंसीलाल पर हक हरियाणा की जनता के एक-एक आदमी का है चाहे वह विपक्ष में है चाहे पक्ष में है। मेरी तरफ से और सदन के सभी सदस्यों की तरफ से हरियाणा की जनता की तरफ से बंसीलाल जी के परिवार से अनुरोध है कि चौधरी बंसीलाल एक सोच थे, चौधरी बंसीलाल एक संस्था थे, उनकी सोच को उनके परिवार के लोगों को आगे बढ़कर बड़प्पन दिखाते हुए और अपने मन-मुटावों को समाप्त करके इतने बड़े आदमी के नाम को लोहारू या भिवानी तक सीमित न रखकर समस्त हरियाणा प्रदेश में और पूरे देश में ले जाने की कोशिश करनी चाहिए, यही मेरी श्रद्धांजलि है।

श्री रामकुमार गौतम (नारनौंद) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से, अपनी पार्टी की तरफ से चौधरी बंसी लाल, चौधरी सूरज भान, स्वामी इन्द्रवेश, श्री जय सिंह राठी, बहन शांति देवी, श्री शीश राम, उस्ताद बिस्मिल्ला खान, हरियाणा के स्वतन्त्रता सैनानी, हरियाणा के शहीदों को, बस दुर्घटना में मारे गए सभी लोगों, बम्बई के मालेगाव में बम विस्फोट में मारे गए लोगों, मेरठ अग्नि दुर्घटना, जम्मू कश्मीर में आतंकवादी हमले में मारे गए लोगों, यमुना नौका दुर्घटना में मारे गए लोगों और जो भी सदस्य पिछले सैशन और इस सैशन के बीच में मारे गए सब लोगों को श्रद्धांजलि देता हूं और शोक संतप्त परिवार के लोगों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूँ। अध्यक्ष महोदय, जहां तक चौधरी बंसी लाल जी का सवाल है, चौधरी बंसीलाल के बारे में बहुत बातें कहीं गई, मैं तो केवल इतना ही कहता हूं कि चौधरी बंसीलाल विकास पुरुष के इलावा कोलफेल के आदमी थे, जो बात उनकी समझ में आ जाती थी और किसी को अगर वे कोई वचन दे देते थे और जिसका भला-बुरा उनके दिमाग में आ जाता था उसको जरूर पूरा करते थे और उसमें किसी की दखलअंदाजी वे बर्दाश्त नहीं करते थे। इमैरजैंसी के वक्त मुझे तीन साल की कैद और 3000 रुपये के जुर्माने की सजा हो गई थी। उस समय बहुत से लोगों ने चौधरी बंसी लाल जी को कहा कि गौतम अच्छा लड़का है और कांग्रेसी परिवार के है इसको छोड़ दिया जाये। लेकिन उनके जहन में एक बात बैठ गई थी कि गौतम सही नहीं है उन्होंने किसी की नहीं मानी। उनकी समझ में आने

[श्री रामकुमार गौतम]

की बात थी कि यह बात सही है और यह बात गलत है उसी के हिसाब से ये फैसला लेते थे और वे अपनी धुन के पक्के थे। उनके मुख्यमंत्री होते हुए उनके स्टाफ में तीन-चार कर्मधारी थे। उनके बारे में उन्होंने अपने चीफ सक्रेटरी से पूछा कि कौन सा इनमें से ज्यादा काबिल है। चीफ सक्रेटरी ने कहा कि पेगे गांव वाला पण्डितों का लड़का होशियार है। चौधरी बंसी लाल जी ने तुरन्त कहा कि पेगे गांव वाले शर्मा को एच.सी.एस. नोमीनेट किया जाये और कर भी दिया। अध्यक्ष जी, चौधरी बंसी लाल जी के दिमाग में बहुत बढ़िया भावना होती थी। जहां तक चौधरी सूरजभान जी की बात है, उनका सारा जीवन दलितों की सेवा में गुजर गया। वे दलितों की सेवा करते थे और गरीब आदमियों की उन्हें बहुत चिंता थी। गरीबों और दलितों पर वे मरते थे मैं सदन से प्रार्थना करूंगा कि यदि यह सदन उनको सच्ची श्रद्धांजली देना चाहता है तो सभी प्रण लें कि आज के बाद दलितों के खिलाफ कोई ज्यादती अत्याचार नहीं करेंगे और जो छूआछात की बीमारी हमारे देश के लिए तथा प्रदेश के लिए कलंक का टीका बनी हुई है उसे जड़ से उखाड़ फेंकें। मैं मुख्यमंत्री जी से निवेदन करूंगा कि जब यह सरकार प्रदेश में आई थी तो उस समय गरीबों को और दलितों को इस सरकार से बहुत उम्मीदें थी क्योंकि पहले वाली सरकार के समय इन पर बहुत जुल्म हुए थे।**

श्री अध्यक्ष : गौतम जी, इस समय शोक प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है। आप इस समय इधर-उधर की बात न करें। गौतम जी ने जो बातें शोक प्रस्ताव से हटकर की हैं, वे रिकार्ड न की जायें।

श्री राम कुमार गौतम: अध्यक्ष महोदय, मैं इस शोक प्रस्ताव में एक-दो नाम और जुड़वाना चाहता हूं। खुशालचंद कम्बोज, डी.एस.पी. जेल थे। उनकी आतंकवादियों ने हत्या कर दी थी इस बारे में मैंने पिछले सैशन में भी जिक्र किया था लेकिन उनके परिवार के सदस्यों को इस सदन की तरफ से किसी प्रकार का कोई संवेदना पत्र नहीं मिला। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि खुशालचंद कम्बोज जी को भी शहीदों में शामिल किया जाये। इसके अतिरिक्त सोनू पुत्र श्री सुल्तान सिंह, गांव आवल, जिला रोहतक, श्रीमती इमला पत्नी श्री इतबारी, गांव नारनौंद, जिला हिसार और अजय पुत्र श्री रामऋषि, गांव नारनौंद, जिला हिसार की गुगामैड़ी के मेले में जाते समय जो दुर्घटना हुई थी उसमें मृत्यु हो गई और 46 घायल हो गये थे। 46 में से 23 को पांच-पांच हजार रुपये मुआवजे के मिल गये थे और 23 को मुआवजा नहीं मिला। मेरी मुख्यमंत्री जी से प्रार्थना है कि जिन 23 घायलों को मुआवजा नहीं मिला उनको भी मुआवजा दिया जाये और जिन तीन की मृत्यु हो गई थी उनके नाम इस शोक प्रस्ताव सूची में ऐड कर लिये जाये।

श्री अध्यक्ष : ठीक है, ऐड कर लिये जायेंगे।

श्री नरेश यादव (अटेली) : अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री महोदय सदन में जो शोक प्रस्ताव लेकर आये हैं मैं उसका अनुमोदन करता हूं खासतौर पर चौधरी बंसी लाल जी जो हरियाणा के निर्माता के रूप में, लौह पुरुष के रूप में और युग पुरुष के रूप में जाने जाते रहे हैं उनके निधन से देश को और प्रदेश को बहुत क्षति हुई है। अध्यक्ष महोदय, मेरे राजनीतिक जीवन की शुरूआत 1978-80 में उस समय शुरू हुई थी जब मैं हिसार कृषि विश्वविद्यालय में पढाई करता था और उसी समय मेरा चौधरी बंसी लाल जी से जुड़ाव हुआ था। मुझे 1991 का लोक सभा चुनाव चौधरी बंसी लाल जी की पार्टी और जनता दल के साझे में लड़ने का अवसर मिला था। अध्यक्ष महोदय, चौधरी बंसी लाल जी अपने सिद्धांत के व्यक्ति थे। उनके अंदर जो गुण

**चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

थे, क्वालिटी थी उसी के हिसाब से उन्होंने अपने समय में प्रदेश को प्रगतिशील बनाने के लिए बहुत काम किए । उन्होंने प्रदेश को जो गति दी वह कभी नहीं भुलाई जायेगी। आज के दिन उन्होंने जो काम किए थे उनको गति देने की जरूरत है। आज चौधरी बंसी लाल जी हमारे बीच में नही हैं। चौधरी बंसी लाल जी ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने भिवानी, महेन्द्रगढ आदि जिलों के टिब्बों में पानी पहुंचाने का काम किया। उन्होंने इन एरियाज में लिफ्ट इरीगेशन के जरिये से पानी पहुंचाया और नहरें बनवाई। लेकिन आज तक उसकी पुनरावृति नहीं हो पा रही है और उनमें कोई नई चीज ऐड नहीं हुई है। चौधरी बंसी लाल जी जो आदेश देते थे उनकी पालना होती थी। उन्हें एक काम के लिए बार-बार किसी अधिकारी को कहना नहीं पड़ता था। किसी भी अधिकारी को एक बार पता चल जाता था कि चौधरी बंसी लाल जी ने आदेश दिया है कि यह काम होना चाहिए तो उस काम पर अमल होता था। हम चौधरी बंसी लाल जी के साथ एक लम्बे समय तक रहे। चौधरी सुरेन्द्र सिंह जी के साथ रहे। चौधरी बंसी लाल जी के सुपुत्र चौधरी सुरेन्द्र सिंह जी ने चौधरी बंसीलाल जी का काम सम्भाला हुआ था और हमने देखा है कि वे पूरे हरियाणा के नौजवानों के भाई की तरह थे, उनके दोस्त की तरह थे, उनका हमारे बीच से अचानक चला जाना चौधरी बंसी लाल जी को हरियाणा प्रदेश के लोगों से दूर ले गया । अध्यक्ष महोदय, मैं आज सदन में प्रस्तुत इस शोक प्रस्ताव पर चौधरी बंसी लाल जी के शोक संतप्त परिवार के साथ अपने आप को जोड़ता हूँ तथा चौधरी बंसी लाल जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

चौ० अर्जन सिंह (छछरौली) : माननीय अध्यक्ष जी ,जो शोक प्रस्ताव माननीय मुख्य मन्त्री जी ने इस सदन में रखा है मैं उन सभी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। चौधरी बंसी लाल, भूतपूर्व मुख्य मंत्री, चौधरी सूरज भान जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, श्री जय सिंह राठी जी, बहन शांति देवी जी, श्री शीश राम जी, बिसिमल्लाह खां जी, हरियाणा के स्वतंत्रता सेनानी, हरियाणा के सभी शहीद, बस दुर्घटना में मारे गए सभी लोग, मुम्बई तथा मालेगांव में हुए बम विस्फोटों में जो लोग मरे हैं, मैं उन सभी लोगों के लिए तथा मेरठ अग्नि त्रासदी, जम्मू कश्मीर में आतंकवादी हमलों में मारे गए लोगों के प्रति और यमुना नदी नौका दुर्घटना में मारे गए सभी लोगों के प्रति तथा अन्य में आदरणीय वित्त मंत्री चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी के चचेरे भाई श्री कर्ण सिंह, हरियाणा के राजस्व मन्त्री कैप्टन अजय सिंह यादव के चचेरे भाई श्री अनूप सिंह, हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री शिव शंकर भारद्वाज के भान्जे श्री सचिन एवं हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री राजेन्द्र सिंह जून की चाची श्रीमति खजानी देवी के दुखद निधन पर मैं अपनी तरफ से तथा अपनी पार्टी की तरफ से हार्दिक दुख प्रकट करता हूं तथा परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इन शोक संतप्त परिवारों को यह असीम दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। जहां तक चौधरी बंसी लाल जी का सम्बन्ध है, मैं उन्हें इन्सान न मान कर भगवान की संज्ञा देता हूं। वे भगवान ही थे इसमें कोई दो राय नहीं है। आज चाहे कोई भी व्यक्ति चाहे किसी भी सरकार में हो अथवा किसी भी पार्टी से जुड़ा हो और चाहे किसी भी बिरादरी से जुड़ा हुआ है, कोई भी व्यक्ति चौधरी बंसी लाल जी में कोई कमी नहीं निकाल सकता है। उन्होंने मेरे खिलाफ एक बार एक केस दर्ज करवा दिया था और वह केस किसी के चुगली करने पर दर्ज करवाया था। चौधरी बंसी लाल जी के वहां से जाने के बाद क्या हुआ वह बात मैं यहां पर बताता हूं कि एक छोटे से वर्कर की बात का भी उनको कितना ध्यान रहता था। लाडवू में प्रोग्राम था और चौधरी साहब ने वहां पर ड्यूटी लगाई हुई थी। वहां पर जाते ही उन्होंने पूछा कि अर्जन के खिलाफ कुछ आदमी वहां पर मिले थे

[चौ० अर्जन सिंह]

और उनका कहना था कि वह लाल बत्ती लगाकर घूमता है और बदमाशों का टोला अपने साथ रखता है, यह करता है, वह करता है। उस वक्त सुभाष चौधरी ने बाबूजी से यह कहा था कि सर, ऐसी कोई बात नहीं है। वह बहुत ही बढ़िया आदमी है, बाबूजी, आपको मिसगाईड किया गया है उनसे अच्छा वर्कर सारे हरियाणा में नहीं है। अध्यक्ष महोदय, मैं डी.सी. साहब के पास बैठा तो बाऊ जी का फोन डी.सी. को आया और कहा कि भाई मैंने जो बातें कहीं है वे मैं वापिस लेता हूं। उसके बाद जब बंसी लाल जी हास्पिटल में थे तो मैं उनके पास गया था। अध्यक्ष महोदय, ऐसा सच्चा आदमी हरियाणा में तो क्या सारी दुनिया में आज तक पैदा ही नहीं हुआ है और न ही होगा। पता नहीं ऐसी दुनिया में भगवान ने ऐसा सच्चा आदमी कैसे भेज दिया था । अध्यक्ष महोदय, एक बार टिकट की बात आई थी तो मैंने कहा था कि बाऊ जी मैं इलैक्शन लड़ना चाहता हूं तो उन्होंने कहा था कि टिकट देते वक्त तेरा ध्यान रखूंगा और तू इलैक्शन लड़ और तू जरूर जीतेगा। जब टिकट मिल रहे थे तो मैंने कहा बाऊ जी मैं इलैक्शन लड़ रहा हूं। उन्होंने कहा जरूर लड़। मैंने कहा बाऊ जी मैंने बहुजन पार्टी से टिकट ले लिया है तो उन्होंने फिर कहा कि कोई बात नहीं तू लड़ और तू जरूर जीतेगा और तेरे जैसे सच्चे आदमी की आज जरूरत है। अध्यक्ष महोदय, उनको इस बात की फ्रिक नहीं थी कौन किस पार्टी से है, वे सच्चे आदमी का हमेशा साथ देते थे।

अध्यक्ष महोदय, एक बार की बात मैं आपके माध्यम से सदन में कहना चाहता हूं कि एक बार चौटाला साहब ने आन्दोलन किया था उस वक्त पत्रकारों ने उनसे पूछा था कि आप इस बारे में क्या कहना चाहते हैं तो उन्होंने उस वक्त भी कहा था किसान गलत कर रहे हैं और उनको अपने बिल भरने चाहिएं। इसी तरह से एक बार पत्रकारों ने जब श्री हुड्डा जी के परिवार की बातें अखबारों में आ रही थी तो उन्होंने पूछा था कि चौधरी बंसी लाल जी आप हुड्डा जी के परिवार में जो हो रहा है उसके बारे में क्या कहना चाहते हैं । उस वक्त भी उन्होंने कहा था कि मैं हुड्डा के परिवार को बहुत अच्छी तरह से जानता हूं और यह परिवार इस तरह की कोई बात नहीं कर सकता है। अध्यक्ष महोदय, उस वक्त मैं बाऊ जी के पास ही बैठा हुआ था जब उन्होंने पत्रकारों से यह बात कही थी। अध्यक्ष महोदय, सुरजेवाला जी ने और चट्ठा जी ने एक एस.पी. के बारे जो बात यहां पर कही है, यह आदमी ठीक नहीं है। तो इस बारे में मैं भी कहना चाहूंगा कि वह बात बिल्कुल सही है उन्होंने कार्यकर्त्ताओं के कहने पर उस एस.पी. की बदली कर दी थी। उस एस.पी. की काफी पहुंच थी और बाऊ जी को लोग कहने लगे कि आपने एक वर्कर के कहने पर ऐसा कर दिया तो उन्होंने कहा कि मेरा वर्कर ठीक कहता है और मैंने जो कर दिया है वह बदलेगा नहीं। उस अफसर ने बहुत जोर लगा लिया था लेकिन कुछ नहीं हुआ । अध्यक्ष महोदय, भाई कर्ण सिंह दलाल जी ने जो बातें कहीं हैं मैं अपने आपको उनके साथ जोड़ता हूं और बंसी लाल जी के परिवार से निवेदन करता हूं कि बंसी लाल जी का प्रदेश और देश में ही नाम नहीं था बल्कि विदेश में भी बहुत नाम था इसलिए आप सब उनके नाम को और ऊंचा उठाएं ।

श्री हर्ष कुमार (हथीन) : अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी ने सदन में भूतपूर्व मुख्यमंत्री जी का और दूसरे साथियों का जो शोक प्रस्ताव रखा है मैं भी उनके प्रति अपनी तरफ से और अपने परिवार की तरफ से गहरा शोक प्रकट करता हूं। इसके साथ ही जो शहीद हैं और जो दूसरी हत्याएं हुई हैं उन सब के प्रति शोक प्रकट करता हूं। माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो चौधरी बंसी लाल जी का शोक प्रस्ताव सदन में रखा है उस बारे में मैं गहरा दुःख प्रकट करता हूं।

सभी साथियों ने, मेरे से बजुर्ग साथियों ने चौधरी बंसीलाल जी के बारे में, उनकी कुछ यादाश्त के बारे में, उनकी नीतियों के बारे में, उनके कुशल प्रशासक के तौर पर उनके द्वारा किए गये कार्यो के बारे में काफी बातें कही हैं। अध्यक्ष महोदय, यह सौभाग्य शायद ही किसी व्यक्ति को मिला होगा जैसा चौधरी बंसीलाल जी को मिला है। मैं तो यहां तक कहूंगा कि एक किस्म से राजनीति में चौधरी बंसीलाल का स्थान, चौधरी बंसीलाल जी का दर्जा इस देश के बहुत से उच्च कोटि के नेताओं से जिन्होंने देश के लिए बहुत कुर्बानियां दी हैं और जोकि पहले ही इस दुनियां से चले गये हैं, किसी भी प्रकार से कम नहीं है। अध्यक्ष महोदय, चौधरी बंसीलाल जी मेरे पिता जी के दोस्त रहे हैं। उन्हीं की प्रेरणा से मैंने भी राजनीति में प्रवेश किया था। मैंने राजनीति में उनको अपना गुरू माना। मैंने राजनीति में चौधरी बंसीलाल जी से बहुत कुछ सीखा। अपना दायित्व निभाने का हुनर मैंने चौधरी बंसीलाल जी से ही सीखा। अपनी नीति और अपने सिद्धांत पर आदमी किस तरह से कायम रह सकता है यह हुनर भी मैंने चौधरी बंसीलाल जी से ही सीखा। आदमी अपनी नीयत से न गिरे यह हुनर भी मैंने उनसे ही सीखा। मुझे सौभाग्यवश उनके साथ काम करने का मौका भी मिला है। अपनी सरकार में उन्होंने मुझे इरीगेशन मिनिस्टर बनने का साधन दिया और उस साधन से मैंने जो चौधरी बंसीलाल जी की बातें देखीं, उनका जो प्रशासन देखा वह बहुत काबिलेतारीफ है। मुझे आज भी याद है कि सिंचाई विभाग में एक वर्ल्ड बैंक का प्रोजैक्ट मंजूर हुआ था। यह प्रोजैक्ट डब्ल्यू.आर.सी.पी.का था। यह शायद 1992 या 1993 में मंजूर हुआ था लेकिन 1996 में जब चौधरी बंसीलाल की सरकार बनी तो उस समय तक इस प्रोजैक्ट का दस परसैंट काम भी नहीं हुआ था। चौधरी बंसीलाल जी ने सत्ता संभालने के बाद उस प्रोजैक्ट पर काम किया। इसी तरह से हथनी कुंड बैराज या ओट्टू वियर वगैरा के जितने भी प्रोजैक्ट उस समय थे उनमें एक भी साईट ऐसी नहीं थी जिस पर चौधरी बंसीलाल जी ने दसवें या पन्द्रवें दिन खुद जाकर काम न देखा हो। उनका जो टीम वर्क का तरीका था वह काबिलेतारीफ था। ऐसी मिसाल राजनीति में बहुत कम मिलती है। हमारा इलाका आगरा कैनाल का इलाका है वहां पर उत्तर प्रदेश से पानी आता है चौधरी बंसीलाल जी ने मेहनत करी और आगरा कैनाल के जो रजवाहे हैं उनको उस समय हरियाणा सरकार ने अपने कंट्रौल में लिया। उनका साढे तीन साल का जो समय रहा तो चाहे मेवात का जिला हो, चाहे फरीदाबाद का जिला हो या चाहे गुड़गांव का जिला हो, इन जिलों की नहरों की एक एक टेल पर उस समय पानी पहुंचा था इसलिए आज भी लोग उस समय को याद करते हैं। हरियाणा में उनकी बहुत मिसालें हैं इसलिए मैं ज्यादा नहीं कहूंगा लेकिन जब भी हमें उनके साथ बैठने का मौका मिलता था तो वे एक ही बात कहते थे कि कभी कितना भी कुछ हो जाए किसी को धोखा मत देना। ईश्वर धोखा देने से नाराज होता है लेकिन धोखा खाने से राजी होता है। वे कहते थे कि जिसके साथ बैठते हो उसी के साथ रहना चाहिए और जिंदगी में कभी भी उसको धोखा नहीं देना चाहिए। मैं अपने आपको किस्मत वाला मानता हूं कि मुझे उनके साथ काम करने का मौका मिला। जब तक वह इस धरती पर रहे और जब वह इस धरती से गए, मुझे उनके साथ रहने का मौका मिला। अध्यक्ष महोदय, इस प्रदेश में जो पिछड़े हुए इलाके हैं उनकी तरक्की की तरफ हमारे मुख्यमंत्री का बहुत ध्यान है। मुख्यमंत्री जी हमारे इलाके को बहुत प्यार करते हैं। 28 अगस्त को जो राजस्थान में कामा तहसील में पानी की टंकी गिरने का हादसा हुआ था उसमें हरियाणा के भी चार नौजवान मारे गये थे। इनके नाम इस प्रकार से हैं- जुबेर पुत्र श्री माजिद, गांव जादोली जिला मेवात, पीर मोहम्मद पुत्र श्री मारू,गांव सिंघलेहरी जिला मेवात, आबिद पुत्र श्री रज़ाक, गांव नाई जिला मेवात, साजिद पुत्र श्री शौकत, गांव तिरवारा जिला मेवात।

[श्री हर्ष कुमार]

इसलिए मेरी गुजारिश है कि बाकी और शोक प्रस्तावों की कड़ी में इनका नाम भी जोड़ लिया जाए। धन्यवाद।

वित्त मंत्री (श्री बीरेन्द्र सिंह) : अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री जी ने जो शोक प्रस्ताव रखे हैं मैं भी उनका समर्थन करता हूं। जो विभूतियां हमारे बीच में नहीं रहीं जैसे चौधरी बंसी लाल जी, सूरज भान जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, जय सिंह राठी, शांति देवी एंव फ्रीडम फाइटर व सीमाओं पर रक्षा करते सेना के नौजवान, उनके प्रति भी गहरा शोक प्रकट करता हूं। आज सबसे पहले तो मैं मुख्यमंत्री जी ने जो फैसला लिया उसके बारें में जरूर कहूंगा कि हम जब से राजनीति में आये, जबसे सत्ता में आए थे तब से हमने कुछ परम्पराओं का निर्वहन करने का फैसला किया था और नयी स्वस्थ परम्पराएं कायम करने की कोशिश की । जब हमें यह सूचना मिली कि हमारे प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री पंडित भगवत दयाल शर्मा और आदरणीय चौधरी देवीलाल जी का निधन हुआ तो उनके निधन के बाद जब भी सदन की कार्यवाही हुई तो उनके सम्मान में सदन स्थगित कर दिया गया, उसी परम्परा का निर्वहन आज हमारी सरकार ने और हमारे सदन के नेता ने किया है। मैं भी इस परम्परा का समर्थन करता हूं। बंसी लाल जी का भी हरियाणा की राजनीति में अपना एक योगदान है जिसको कोई भुला नहीं सकता। बहुत से साथियों ने उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में चर्चा की। उनके बारे में उनकी जो अपनी-अपनी यादें थी, उनको उन्होंने दोहराया। मैं उनके एक खास पहलू के बारे में जरूर कहना चाहूंगा। आज की राजनीति में ईमानदारी की छाप अगर कोई रख सकता है तो उसको उसका बहुत बड़ा श्रेय जाता है। आज की राजनीति में जिस प्रकार से बड़े -बड़े नेताओं पर उंगलियां उठती हैं लेकिन चौधरी बंसी लाल जी ने अपने सारे राजनीतिक जीवन में जो परम्पराएं हैं, जो मूल्य हैं उनका तो उन्होंने निर्वहन किया ही, उसके साथ ही साथ उन्होंने अपनी राजनीति में ईमानदारी की एक मिसाल भी कायम की और उसका अगर किसी को अंदाजा हो सकता है तो वह मुझे ही हो सकता है शायद और किसी को न हो। 1989 में 23 या 24 जनवरी को उनको हार्ट की तकलीफ हुई थी उस वक्त उनके पास मैं ही था जब उनको ज्यादा दर्द हुआ तो उन्होंने मुझे कहा कि मेरे पास ड्राईवर या मेरा कोई अपना आदमी नहीं है और बीरेन्द्र सिंह तेरे पास गाडी है तू ही मुझे होस्पीटल ले चल। मैं उन्हें होस्पीटल लेकर गया तो वहां के डॉक्टर्स ने कहा कि इनको तो तकलीफ ज्यादा है इसलिए इनको राम मनोहर लोहिया अस्पताज ले जाना पड़ेगा। मैंने उन्हें वहां ले जाकर ऐडमिट करवाया उसके बाद उन्होंने मुझे कहा कि भिवानी खबर करो। मैं अपने मकान में आया, उन दिनों मैं दिल्ली में 8 विशंभर दास में रहता था। मैंने भिवानी खबर की उसके बाद फिर टैलीफोन आया कि आपको बाबू जी ने बुलाया है। मैं फिर वापस गया तो मेरे पहुंचने पर उन्होंने कहा कि कमरे का दरवाजा बंद कर दो, मैंने कमरे का दरवाज बंद किया तो उन्होंने मुझसे यह कहा कि मेरे पास इतनी संपत्ति है, यह कुछ है। हो सकता है कि इस बात का उनके बच्चों को भी पता न हो। उन्होंने मेरे को सारा ब्यौरा दिया कि मेरे पास ये ये सामान है। सामान के बारे में सुनकर मैं हैरान था कि एक आदमी जो 11-12 साल तक मुख्यमंत्री रहा हो उसके बावजूद उनके पास ऐसा कुछ नहीं था जिसकी वजह से उनको चिंता हो और वे मुझे उस बारे में कहना चाहते हों लेकिन एक बात उन्होंने जरूर कही कि जो मैं यहां कहना चाहूंगा और उसी बात को कहने के लिए मैं खड़ा हूं उन्होंने कहा कि यह सारा कुछ मेरे दोनों बेटों को बता देना क्योंकि जब तक वे आएंगे तब तक शायद मैं जिंदा नहीं रहूंगा। उनसे दूसरी बात यह कहना कि वे आपस में लड़ाई न करें। आज भाई सुरेन्द्र सिंह हमारे बीच में नहीं है, भाई रणबीर

सिंह यहां पर हैं। मैं तो यह मानता हूं यह उनकी आखिरी इच्छा थी। हो सकता है कि उन्होंने वर्ष 1989 में यह सोचा हो। आज हरियाणा ऐसे युग पुरूष जिन्होंने राजनैतिक मान्यताओं का निर्वहन किया हो जिन्होंने राजनैतिक जीवन में मूल्यों का निर्वहन किया हो जिन्होंने राजनैतिक जीवन में ईमानदारी के प्रतीक के तौर पर जाने गये हों और यही नहीं अध्यक्ष महोदय, चौधरी बंसीलाल जी जब मुख्यमंत्री बने थे तो उनके बारे में कोई नहीं जानता था कि वे किस जाति के हैं और किस बिरादरी से हैं। जब उनको मुख्यमंत्री की शपथ लेने के लिए हाई कमान ने फैसला किया तो मेरे पिता जी ने मुझ से पूछा कि यह कौन है। तो मैंने कहा कि मैं उनके लड़के सुरेन्द्र को जानता हूं क्योंकि हम लॉ में इकट्ठे पढ़ते हैं और मैंने उनको बताया कि यह फलां गांव के हैं। उनकी जो पहचान थी वह यह थी कि सभी बिरादरी के मुख्यमंत्री थे। चौधरी बंसीलाल जी 12 साल प्रदेश के मुख्यमंत्री रहने के बाद और 40 साल तक राजनीतिक जीवन बिताने के बाद उनकी वही पहचान बनी रही कि वे किसी एक बिरादरी के नेता नहीं बने तथा वे किसी एक पक्ष विशेष के नेता नहीं बने। उनको अगर जाना गया तो इस बात से जाना गया कि सभी बिरादरी के लोगों ने उन्हें प्यार दिया इज्जत दी। यह उनकी सबसे बड़ी पहचान थी वरना तो दूसरे लोग आए और गये लेकिन उनकी पहचान दूसरे तरीके से बनी। लेकिन प्रजातंत्र में अगर हम जातिवाद से ऊपर उठकर धर्मान्धता से ऊपर उठकर अगर हम सोचते हैं तो यह एक बड़ी सोच का परिचायक है। इसलिए मैं मानता हूं कि चौधरी बंसीलाल सिर्फ एक कुशल प्रशासक ही नहीं थे चौधरी बंसीलाल जी में सिर्फ अपनी बातों के धनी होने की जो उनमें खासियत थी सिर्फ वही नहीं थी उनकी जो सोच थी उसका एक विराट रूप था उस सोच का होना ही एक बड़े आदमी और एक युगपुरूष का प्रतीक होता है। पण्डित जवाहर लाल नेहरू का जब कोई देश का बड़ा नेता चुनाव में कहीं पर खड़ा होता था और उनका पता लगता था चाहे वे आचार्य कृपलानी हो या अहमदाबाद में इन्दु भाई याग्निक हों वे वहां जाकर खुद भाषण देते थे और कहते थे कि यह भला आदमी है मैं इसके विरोध में वोट मांगने नहीं आया जो आपका मन कहे वह फैसला करना। ऐसे ही चौधरी बंसीलाल जी भी जब कहीं पर भी किसी पार्टी का उम्मीदवार खड़ा होता था तो अपनी पार्टी की परवाह न करते हुए किसी भले आदमी के लिए दो शब्द कहने से नहीं चूकते थे। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि बड़े व्यक्तित्व के धनी थे और हरियाणा की राजनीति से उनका जाना और उस खला को पूरा करना उसी प्रकार की राजनीति का निर्वहन करना है यह हमारे लिए एक चुनौती है अगर हम इस चुनौती को स्वीकार करते हैं तो हम चौधरी बंसीलाल जी को सही श्रद्धांजलि दे सकते हैं। इसी प्रकार से श्री सूरजभान जी जो एक छोटे से परिवार से उभरकर आये थे। उनका एक किस्सा मुझे याद है वे ज्यादातर आर.एस.एस. और बी.जे.पी. से जुड़े रहे और उनका कार्यक्षेत्र आर.एस.एस. और बी.जे.पी. ही थे। जब वे यू.पी. के गवर्नर थे तो एक बार मुझे पार्लियामेंटरी हाऊस में मिल गये तब उन्होंने कहा कि चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी मेरा जल्दी ही तबादला होने वाला है शायद उनको जब हिमाचल का गवर्नर बनाना तय हो चुका था। तब उन्होंने कहा कि आप एक बार नैनीताल का गवर्नर हाऊस में मेरे निमंत्रण पर जरूर रूक कर देखो तो आप जान पाओगे कि उससे बढ़िया कोई ऐसा भवन नहीं देखा होगा। उनका इतना प्रेम भी मेरे प्रति था हालांकि मैं तो दूसरी पार्टी से संबध रखता था। ऐसे लोग भी हरियाणा में हुए हैं। इसी प्रकार से स्वामी इन्द्रवेश जो सामाजिक कार्यकर्ता थे जो धर्म के क्षेत्र में धर्मान्धता के खिलाफ और भ्रूण हत्या के खिलाफ आखिरी दम तक लड़ते रहे ऐसे महापुरूष हमारे बीच से उठ गये हैं मैं अपनी तरफ से चौधरी बंसीलाल जी और सभी महान विभूतियों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

[वित्त मंत्री (श्री बीरेन्द्र सिंह)]

अध्यक्ष महोदय, मैं सभी सदस्यों से प्रार्थना करुंगा कि हम सब आज इनके व्यक्तित्व में जो गुण थे उन गुणों को ग्रहण करेंगे, इससे हमें इस बात का अहसास होगा कि हमने महापुरुषों से कुछ सीख ली। इन्हीं शब्दों के साथ मैं दिवंगत सदस्यों को अपनी पुष्पांजलि अर्पित करता हूं।

Minister of State for Forests (Smt. Kiran Chaudhary) : Hon'ble Speaker, Sir, as I rise today to give my respectful obituary references to all those who are not with us today. I am reminded of immortal words. "Lives of great men remind us, we must make our lives sublime, and departing leave behind us, footsteps on the sands of time." There is no doubt whatsoever in my mind and in the minds of all the people of Haryana and the nation that Ch. Bansi Lal Ji, has left an indelible imprint on the people of Haryana and also the nation. Sitting here today, hearing everybody, I get a sense of pride that I belong to a family, to a name that has been eulogised here over and over again with so much of respect and honour. Mr. Speaker, Sir, the moment, Ch. Bansi Lal, took over as the Chief Minister of Haryana in 1968, Smt. Indira Gandhi Ji, gave him her blessings. His first priority was to get down to development works. He started of by building a network of roads, bringing electricity to every village, schools, hospitals and Universities everything that the State required and in fact Haryana became the first State in the entire nation, which could boast of roads and electricity in every village. He was a great visionary, a man who thought of the future. He came from very humble belongings but his mind was empowered with a great many visions. He had a dream and to conceptualize the dream, he worked very hard. Mr. Speaker Sir, tourism in Haryana was started by him. He pioneered tourism in the State when nobody had ever heard of Highway tourism. It was pioneered by him and there were so many first instances which he pioneered. Mr. Speaker Sir, he was a man who was an avid reader, he had voracious appetite for it. He was an able and strong administrator. He was a man who believed in women empowerment. It is a fact. I have no hesitation in saying so here today that it was he, after the tragic death of his son, Shri Surender Singh in helicopter incident, who took the decision of putting the Pugree on the head of his grand daughter, Shruti Chaudhary, amid protests but he knew that this was the right thing to do and he carried forth irrespective of age old customs. He was a man who liked to do everything in record time and a lot of my colleagues spoke about his dynamism. Hathni Kund Barrage was made in record time. He understood the very basic grassroots and what the State required and that was the reason why Smt. Indira Gandhi ji called him back to the Centre and made him Railway Minister and gave him the responsibility of the Surface Transport Minister, where he did a commendable work. He was the Minister of the Surface Transport for Aviation and for also Shipping, alongwith that he was afterwards made the Defence Minister of the nation and his contribution towards nation building as far as the Defence was concerned, is also very contributory and very laudable.

Mr. Speaker Sir, there is no doubt that he was a man of destiny and destiny itself had chosen him to come forward and work for the State.

खुदी को कर बुलंद इतना

खुदा बंदे से खुद पूछे

बता तेरी रजा क्या है ।

He definitely was a man of destiny and with sheer hard work, great honesty and vision, he made Haryana a modern Haryana of today. I feel a deep sense of pride to be family member of such a great man like him. Mr. Speaker Sir, I would like to say that our Chief Minister is carrying on in the same footsteps as far as development is concerned. We should unanimously pass a resolution in the House that Ch. Bansi Lal Ji should be given Bharat Ratna and we should send that resolution to the Prime Minister that Ch. Bansi Lal should be awarded Bharat Ratna. Thank You.

श्री रणबीर सिंह महेन्द्रा (भुंडालखुर्द): माननीय स्पीकर साहब, आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी ने सदन के सामने जो शोक प्रस्ताव रखा है उसके लिए मैं उनका धन्यवाद करता हूं । इसके अतिरिक्त जिन वक्ताओं ने इस शोक प्रस्ताव पर अपने विचार प्रकट किए हैं उनका भी मैं तहदिल से शुक्रिया अदा करता हूं । अध्यक्ष महोदय, मैं बोलना नहीं चाहता था लेकिन एक बात मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी को और सदन को कहना चाहता हूं कि चौधरी बंसी लाल जी की सर्विसिज को जिस हिसाब से आज याद किया गया है वे उनके किए हुए कामों के अनुरूप है । उन्होंने अपने कामों को जो अमलीजामा पहनाया उसके बारे में हम सभी जानते हैं । लेकिन एक बात मैं कहना चाहता हूं कि मेरी पूज्य माता जी चौधरी बंसी लाल जी की धर्म पत्नी हैं । वे आज भी अपने ही मकान में पुलिस की हिरासत में है और यहां लोग बैठे हुए हैं । अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से हाउस से और मुख्यमंत्री जी से प्रार्थना करता हूं कि हमारी चार दीवारी में जो पुलिस के आदमी बैठे हैं उनको बाहर निकाला जाये ताकि मेरी मां ठीक से रह सके, धन्यवाद ।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, मुख्यमंत्री जी ने जो शोक प्रस्ताव सदन में रखा है और दिवंगत आत्माओं के प्रति माननीय सदस्यों ने जो अपने विचार प्रकट किये हैं मैं भी अपनी भावनाएं उनके साथ जोड़ता हूं । पिछले अधिवेशन के समाप्त होने के पश्चात और इस अधिवेशन के आरम्भ होने के बीच में हमारे बीच में से कई महान विभूतियां इस दुनियां को छोड़ कर चली गई हैं ।

सबसे पहले मुझे चौधरी बंसी लाल, हरियाणा के भूतपूर्व मुख्य मंत्री तथा केन्द्रीय मंत्री के हुए दुखद निधन पर बहुत ही दुख है । चौधरी बंसी लाल जी ने जो हरियाणा प्रांत के कल्याण तथा बहुमुखी विकास के लिए कार्य किये उनसे हम सभी भली-भांति परिचित हैं और उनके हरियाणा प्रांत के विकास में दिए गए योगदान को हम कभी भी नहीं भूल सकते हैं । वे न केवल कुशल राजनीतिज्ञ थे बल्कि बहुत ही अच्छे प्रशासक भी थे । हरियाणा के ग्रामीण तथा शहरी विकास का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं होगा जहां उन्होनें अपनी कार्यकुशलता की गहरी छाप न छोड़ी हो । न केवल हरियाणा में बल्कि देश की राजनीति में भी उन्हें कई बार संसद सदस्य तथा केन्द्रीय मन्त्री के रुप में सेवा करने का अवसर मिला । उन्होनें वहां पर भी रक्षा, परिवहन तथा रेलवे जैसे बहुत ही महत्वपूर्ण विभागों में अभूतपूर्व कार्य किये और अपनी सक्षम एवं असाधारण कार्यकुशलता से सारे देश को प्रभावित किया । भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्रीमति इन्दिरा गांधी के वह अति निकट सहयोगी रहे

और उनके आर्शीवाद से उन्होंने आम जनता के कल्याण के लिए सभी कार्य किये । माननीय सदस्यगणों ने चौधरी बंसी लाल जी के बारे में बहुत कुछ कहा है इसलिए मुझे कुछ और ज्यादा कहने की ज़रुरत नहीं है । उनके निधन से न केवल हरियाणा प्रांत ने बल्कि पूरे देश ने एक अभूतपूर्व राजनीतिज्ञ तथा कुशल प्रशासक खो दिया है ।

मुझे भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री तथा उत्तर प्रदेश, बिहार तथा हिमाचल प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल श्री सूरजभान के निधन पर भी गहरा दुख है । श्री सुरजभान जी हरियाणा विधान सभा के सदस्य तथा मन्त्री भी रहे । लोक सभा में भी वह तीन बार चुने गए और उन्होंने वहां पर कई संसदीय समितियों के सदस्य एवं अध्यक्ष के रुप में कार्य किया । उन्होंने लोक सभा के उपाध्यक्ष पद पर रह कर भी देश की सेवा की । उनका अनुसूचित जाति एवं जन जाति के साथ विशेष लगाव था । वे राष्ट्रीय अनुसूचित जाति एवं जन जाति आयोग के अध्यक्ष के रुप में अंतिम समय तक कार्य करते रहे । उनके निधन से हमने एक योग्य प्रशासक तथा कुशल सांसद खो दिया है ।

मुझे स्वामी इन्द्रवेश के निधन पर भी गहरा दुख है । उन्होनें लोक सभा के सदस्य के रुप में तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति के रुप में देश की सेवा की । सामाजिक बुराईयों को जड़ से उखाड़ने में उनका विशेष योगदान रहा है । वे आर्य समाज से सम्बंधित थे और आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है । उनके निधन से हमने एक महान समाज सुधारक तथा सांसद को खो दिया है ।

मुझे श्री जय सिंह राठी तथा बहन शांति देवी हरियाणा के भूतपूर्व सदस्यों के निधन पर भी गहरा दुख है । श्री जय सिंह राठी की खेलों में विशेष रुचि थी तथा बहन शांति देवी एक सच्ची समाज सेविका थी । करनाल में उनकी समाज सेवा से सभी परिचित हैं ।

मुझे श्री शीश राम, संयुक्त पंजाब विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य के निधन पर भी गहरा दुख है ।

मैं संगीत क्षेत्र के महान कलाकार और शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खान के निधन पर भी गहरा दुख प्रकट करता हूं। वह एक उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे। उन्होंने संगीत के क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों के लिए "भारत रत्न" जैसा सर्वोच्च सम्मान प्राप्त किया। संगीत जगत में उन जैसा समर्पित कलाकार मिलना बहुत ही मुश्किल है। उनके निधन से हमने एक उच्च कोटि का महान संगीतज्ञ खो दिया है।

इसके साथ ही मैं स्वतन्त्रता सेनानियों, जिनका नाम माननीय मुख्य मंत्री जी ने अपने शोक प्रस्ताव में लिया है, के निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। आज इन्हीं स्वतन्त्रता सेनानियों की कुर्बानी का फल है कि हम एक आजाद तथा विकासशील देश के नागरिक हैं। इन स्वतन्त्रता सेनानियों ने सच्चे मन एवं पूर्ण समर्पण से देश की सेवा करते हुए हंसते-हंसते अपनी कुर्बानी दी। हमें इनके बलिदान से प्रेरणा लेते हुए अपने देश और समाज की पूर्ण रूप से सेवा करनी चाहिए। मुझे हरियाणा के उन सभी शहीदों, जिनका नाम मुख्य मंत्री जी ने अपने शोक प्रस्ताव में लिया है और जिन्होंने देश की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये, की कुर्बानी पर गहरा दुख है। मैं इन सभी स्वतन्त्रता सेनानियों तथा शहीदों को कोटि कोटि प्रणाम करता हूं। इनके अलावा मुझे हरियाणा पुलिस कर्मियों तथा सोनीपत में मासूम बच्चों के बस हादसे में मारे जाने पर गहरा शोक है।

मैं मुम्बई तथा मालेगांव में बम विस्फोट, भेरव आग दुर्घटना, जम्मू कश्मीर में आंतकवादी हमलों और यमुना नौका दुर्घटना में जिन निर्दोष व्यक्तियों ने अपनी जान खो दी है उन सभी के निधन पर भी गहरा शोक प्रकट करता हूं।

मुझे चौधरी बीरेन्द्र सिंह के चचेरे भाई श्री कर्ण सिंह, कैप्टन अजय सिंह यादव के चचेरे भाई श्री अनूप सिंह, डॉ शिव शंकर भारद्वाज के भांजे श्री सचिन, श्री राजेन्द्र सिंह जून की चाची श्रीमती खजानी देवी के निधन पर भी गहरा शोक है।

इन सभी दिवंगत आत्माओं के शोक संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति मैं अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं। मैं परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता हूं। उन शोक संतप्त परिवारों तक इस सदन की संवेदना पहुंचा दी जाएगी। अब मैं दिवंगत आत्माओं के सम्मान में उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए दो मिनट का मौन धारण करने के लिए सदन के सभी सदस्यों से खड़ा होने के लिए अनुरोध करता हूं।

(इस समय हाऊस के सभी माननीय सदस्यगण ने दिवगंत आत्माओं के सम्मान में खड़े होकर दो मिनट का मौन धारण किया।

अति विशिष्ट व्यक्ति का स्वागत

Mr. Speaker : Hon'ble Members, Ch. Ranbir Singh, father of our Hon'ble Chief Minister जो एक बहुत बड़े स्वंतन्त्रता सेनानी रहे हैं और only surviving member of the Constituent Assembly हैं और जिन्होंने ज्वायंट पंजाब के वक्त में मंत्री के रूप में प्रदेश की सेवा की है और लोक सभा के सदस्य भी रहे हैं और इन्होंने एक full dedication के साथ cause of the farmers or downtrodden के लिए कर्तव्याप्रायण्ता से काम किया। Since the House is making obituary references to the freedom fighters and his close friend Ch. Bansi Lal के आबीचुअरी रैफरैंस के लिए हमारे साथ सदन में उपस्थित हैं, I welcome him on behalf of the House and myself.

बैठक का स्थगन

Hon'ble Members as suggested by the Leader of the House and supported by other members and keeping the sense of the House, the House is to be adjourned for the day as a mark of respect to memory of Ch. Bansi Lal and business entered in the list of business for today will be taken up tommorrow.

Now, the House is adjourned till 9.30 A.M. tomorrow.

15.53 hrs (The Sabha then adjourned till 9.30 A.M. on Tuesday, the 19th September, 2006)

41992—H.V.S.—H.G.P.,Chd.